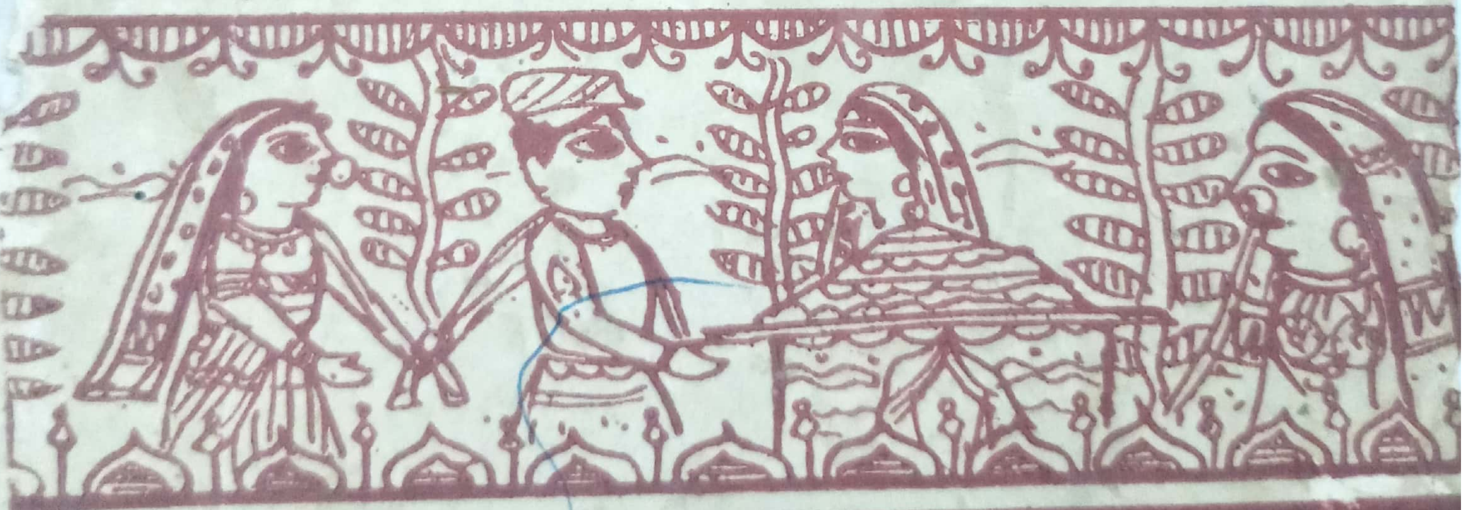
मैथिली

प्राचीन गीत मंजरी

• डॉ. रामदेव झा





जेनरल बुक एजेंसी
पटना-४

मैथिली

प्राचीन गीत मंजरी

सम्पादक

डा० रामदेव झा

विश्वविद्यालय प्राचार्य

मैथिली विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

दरभंगा

प्रकाशक :

जेनरल बुक एजेन्सी

प्रकाशक एवं पुस्तक बिक्रेता

अशोक राजपथ-चोहट्टा

पटना-८००००४

प्रकाशक

श्री अशोक कुमार मिश्र

जेनरल बुक एजेन्सी

प्रकाशक एवं पुस्तक बिक्रेता

अशोक राजपथ-चौहट्टा

पटना-८०००४

प्रथम संस्करण-१९९१-[redacted]

मूल्य-१०·००

मुद्रक

संतोषी प्रिन्टर्स

शाहगंज-पटना—६

कवि ओ काव्यक क्रम



मैथिली गीत काव्यक परम्पराक विकास

मैथिली साहित्यक इतिहास अत्यन्त दीर्घ अछि। एहि इतिहासक सामान्य अवलोकन सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली साहित्य से गीतक समृद्ध परम्परा रहल अछि। अवश्ये प्राचीन मैथिली साहित्य मे नाटक हुक अविच्छिन्न पराम्परा रहल अछि परन्तु ओहुमे गीतहिक प्राधान्य रहल अछि। मिथिलाक कीर्त्तनियाँ परम्परा मे रचित नाटक सब तँ गीतहिक प्रमुखताक कारणें मैथिली नाटकमे परिगणित होइत अछि। यद्यपि गीतक अतिरिक्त किछु अपवाह-रूप सेहो भेटि जाइत अछि। तथापि सामान्यतया ई कलह जाय जे कवीश्वर चन्दा झा सँ पूर्वक समग्र मैथिली साहित्यमे गीत साहित्येक व्यापकता रहल अछि, तँ अत्युक्ति नहि होयत।

काव्य-रूपक दृष्टिएँ गीत मुक्तक काव्यक कोटि मे अबैत अछि। मुक्तक काव्य एकटा एहन लघुकाव्य थिक जे अपना मे तेना पूर्ण रहै छ जे ओकर अर्थ बोधक हेतु पूर्वापर सन्दर्भक अपेक्षा वा निर्भरता नहि रहैत छैक। गीत हुक सम्बन्ध मे ई लक्षण घटित होइत अछि। गीतो एकटा लघुकाव्य थिक आ एकर अर्थ अपना मे पूर्ण रहैत छैक। तथापि मुक्तक काव्यओ गीत काव्य कें एकहि रूपक काव्य मानब उपयुक्त नहि। दुहुमे पार्थक्य अछि। मुक्तक पद्य सामान्यतः पाठय काव्य होइछ। बेसी सँ बसी ओकर सस्वर पाठ कयल जा सकैत अछि। गीत काव्यक सबसँ पैघ विशेषता थिक ओकर गेय धर्मिता। गीत मे संगीत-तत्वक विशेष महत्व रहैत अछि। गीत होइत अछि राग-ताल-लयाश्रित अथवा भासक आश्रित। राग-भासक संयोगे सँ कोनो मुक्तक काव्य गीतक कोटि मे परिगणित होयबाक योग्य होइत अछि। अतः गीत क बन्धन राग-भासक अनुकूल होयब आवश्यक होइत अछि।

प्राचीन संस्कृत साहित्य मे राग-ताल निबद्ध पद्यक अभाव देखना जाइत अछि। अवश्ये कालिदासक विक्रमोर्वशीय नाटकक चतुर्थ अंक मे गीत क सन्निवेश अछि किन्तु ओ गीत संस्कृत मे नहि, अपितु अपभ्रंश वा देशी भाषा मे अछि। किछु विद्वान् विक्रमोर्वशीय नाटकक गीतक भाषा कें प्राच्य अपभ्रंश मानबाक पक्ष मे छथि। प० गोविन्द झाक कथन छनि जे 'संस्कृत नाटक मे गीतक परम्परा कालिदासक बिक्रमोर्वशीय नाटकहि सँ आरम्भ भेल जतए अपभ्रंश भाषा मे प्रचुर गीत पाओल जाइत अछि आ एहि गीतक अपभ्रंश कें जं प्राच्य अपभ्रंश वा ताहू सँ आगाँ बढ़ि मैथिल अपभ्रंश कही तँ कोनो अत्याक्ति नहि होएत।' (मैथिली नाटक : अधुनातन सन्दर्भ पृ० 1-2)।

वास्तव मे राग-भासक संग पद्य गानक परिपाटीक आविर्भाव देशी भाषा-साहित्यक आविर्भावक संग भेल बुझना जाइत अछि। एकर आविर्भावक क्षेत्रो प्राय: प्राच्ये भारत छल। कारण रागनिर्देश पूर्वक रचित गीतक प्राचीनतम उदाहरण प्राच्य भारत मे आविर्भूत सिद्ध लोकनिक द्वारा रचित चर्या गीत मे भेटैत अछि। चर्या गीत मे एहन अनेक विशेषता देखल जाइत अछि जकर पूर्ववर्त्ती संस्कृत साहित्य मे अस्तित्व नहि देखि पड़ैछ। चर्या गीतक पद्य सब सामान्यत: मात्रावृत्त मे अछि। प्रत्येक चरण-युग्म मे अन्त्यानुप्रासक योजना अछि। किछु गीत मात्र अष्टपदी वा चतुर्दशपदी अछि, अन्यथा समस्त गीत दशपदी अछि। गीतक अन्तिम वा उपान्तक चरण मे 'भणइ' क्रियापदक संग गीत कर्त्ताक नामक उल्लेख अवश्यमेव भेल अछि। गीत कर्त्ताक रूप मे कविक नामक उल्लेख कें पश्चात् काल 'भणिता' अभिधान पड़ल। प्रत्येक गीत मे रागक निर्देश कयल गेल अछि। निर्दिष्ट राग सब अछि—अरू (?), कह्नु मंजरी, कामोद, गवुड़ा (गउड़ा), गुञ्जरी वा गुंजरी, देवक्री (देवकरी), देशाख, धनसी (धनछ-धना श्री), पटमञ्जरी, भैरव ओ भैरवी, मल्लारी, मालसी (माल-श्री), मालसी-गवुड़ा, बराड़ी ओबलाड़ि, बंगाल, रामक्री (रामकरी) तथा शबरी। एक गोट गीत मे इन्द्रतालक निर्देश भेटैत अछि।

एहन अनुमान कयल जा सकैछ जे सामाजिक जीवन मे देशी भाषाक

लोक गीत सब ओहि काल मे विशेष लोकप्रिय छल तथा संगीत हुक क्षेत्र मे रागानुसार देशी गीत सभक संगीतज्ञ लोकनि प्रयोग करैत छलाह। बौद्धसिद्ध लोकनि अपन समकालिक देशी भाषाक लोक गीत ओ संगीतक क्षेत्र मे प्रचलित देशी भाषा गीतक अनुसरण करैत अपन विचारक अभिव्यक्तिक माध्यम रागबद्ध गीत कें बनाओल। एहि तरहें देशी भाषाक लोक गान कें साहित्यिक मान्यताक प्रतिष्ठा प्रदान कयल। संस्कृत मे राग-ताल-बद्ध गीतक परिपाटी कें साहित्यिक गरिमा प्रदान करबाक श्रेय महाकवि जयदेव कें भेटलैन। प्राच्य भारत मे बारहम शताब्दी मे जयदेव लोक गीतक रसात्मक ओ गेयधर्मी शैलीक अनुसरण कऽ 'हरिस्मरणे सरसंमन;' तथा 'विलास-कलासु कौतूहल'क उद्देश्य कें समक्षराखि संस्कृत भाषा मे राधा-कृष्णक प्रेमलीला विषयक 'गीत गोविन्द' नामक प्रबन्धकाव्यक रचना कयल। एहि कृतिक बाह्य स्वरूप प्रबन्धात्मक अछि परन्तु आभ्यन्तर स्वरूप गीतात्मक अछि जकरा कृतिक नामहुमे संयोजित कऽ देल गेल अछि। एकर अर्थ ई भेल जे प्रबन्ध मे गीतक प्रयोग आकस्मिक नहि, पूर्ण सुविचारित छल तथा कृतिकारक इष्ट छल जे श्रोताक ध्यान ओहि गीत दिस अवश्य आकृष्ट होइन। जयदेवक संस्कृत भाषा-मय ई कोमलकान्त पदावली; अपन सरल पदबन्ध, लयात्मकता, अन्त्यानुप्रासिकता तथा रसवत्ता मे संस्कृत काव्य-परम्परा सँ भिन्न, सर्वथा अभिनव ओ लोक भाषाक अत्यन्त निकट छल। चर्या गीतक ओ विशेषता सब जकर परिगणन पूर्वहि कयल गेल अछि से जयदेवक गीत मे यथावत् देखल जाइत अछि। अनेक विद्वानक धारणा छनि जे गीत गोविन्दक गीत सब मूलतः देशी भाषा मे रचल गेल तथा पश्चात् ओकरा संस्कृत भाषा मे रूपान्तरित कयल गेल। तें डा० सुनीति कुमार चटर्जी 'गीत गोविन्द' कें भारतीय साहित्य मध्य नवयुग अर्थात् भाषा युगक प्रवेश गीत कहने छथि। (जयदेव, साहित्य अकादमी, नवी दिल्ली)।

उपर्युक्त विशेषताक कारणे गीत गोविन्द अत्यन्त लोकप्रिय भेल। जन-मानस जयदेवक काव्य-रस-सीकर सं आप्यायित भऽ गेल। परवर्ती कवि-

मानस पर सेहो एकर गम्भीर प्रभाव पड़ल। गीत गोविन्दक विषय ओ शैलीक अनुसरण संस्कृत ओ देशी भाषा,दुहूक माध्यमे होमऽ लागल। परन्तु दुहू मे अनुसरण प्रक्रिया मे भिन्नता देखल जाइत अछि। संस्कृत मे जयदेवक प्रबन्ध शैली कें यथावत् अनुसरण करबाक प्रवृत्ति देखल जाइत अछि, जे ओहि पद्धति पर रचित विभिन्न संस्कृत काव्यकृति सँ प्रमाणित होइत अछि, यथा— गीत गङ्गाधर (कल्याण, राजशेखर, चन्द्रशेखर सरस्वती), गीत गोपी पति तथा गीत गणपति (कृष्णदत्त), गीत गौरी पति (भानुदत्त), कृष्ण गीत (सोमनाथ), गीत राघव (रामकवि, हरिशंकर, प्रभाकर), गीत गिरीश (रामभट्ट), संगीत माधव (गोविन्द दास), गीत वीतराग (अभिनव चारु कीर्त्ति), गीत गौरी (तिरुमल), गीत-मुकुन्द (कमललोचन), गीत शंकर (भीष्ममिश्र, अनन्त नारायण, हीर) इत्यादि। सोलहम शताब्दीक प्रथम चरण मे उड़ीसाक राय रामानन्द 'जगन्नाथ वल्लभ' नामक नाटकक रचना संस्कृत मे कयने छलाह जाहि मे जयदेवक गीत-शैली पर स्वरचित एकैस गोट गीतक समावेश कयने छथि। एहि ठाम स्मरणीय जे जयदेवक गीत गोविन्द हुमे एकैसे गोट गीतक समावेश अछि। संस्कृत काव्यधारा सँ हटि, देशी भाषा मे गीत गोविन्दक प्रबन्धात्मकताक परित्याग कऽ ओकर गीत मात्र कें मुक्तक काव्यक शैलीक रूप मे ग्रहण कयल गेल तथा विषय-वस्तुक रूप मे राधाकृष्णक प्रेमेक वर्णनें नहि, अपितु सामान्य नायक-नायिकाक समस्त रति-व्यापार ओ शृंगार रसक समग्र उपादान कें समेटि लेबाक चेष्टा कयल गेल।

नव्य भारतीय आर्य भाषा सभक आदिकालीन साहित्येतिहास पर पर्यालोचन सँ ई बात स्पष्ट होइत अछि जे जयदेवक प्रभाव उच्छल प्रवाहक रूपमे सर्वप्रथम मैथिलीए साहित्यमे अवक्षेपित भेल; से भेल कवि कोकिल विद्यापतिक ललित पद-विन्यासमय रससिक्त अजस्र गीत-रचनामे। गीत गोविन्दक रचयिता जयदेव छलाह तँ विद्यापति अभिनय जयदेवक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। परन्तु ई कहब समीचीन नहि लगैत अछि जे सर्वथा जयदेवेक प्रभाव सँ विद्यापतिमे अकस्मात् गीत-रचनाक स्फुरण भेलनि। विद्यापति जाहि देसिल

बयनाकें अपन काव्य-सर्जनक माध्यम बनौलनि ताहिमे हुनकासँ पूर्वहि एकटा समृद्ध साहित्यिक परम्पराक अस्तित्वक प्रमाण अछि। बौद्ध-सिद्ध लोकनिक चर्यागीतक उत्तराधिकार मैथिलीयोकें ओतबे प्राप्त छलैक जतबा मागधी-प्रसूत अन्य प्राच्य भाषा सभक दावा कयल जाइछ। किन्तु अन्य कोनहु मागधी-प्रसूत नव्य भारतीय आर्यभाषामे चर्यागीत-शैलीक निर्बाध परम्परा देखबामे नहि अबैत अछि। दोसर दिस मैथिलीक कतोक प्रसिद्ध छन्द यथा—तिरहुति, उचिती, जोग, बटगबनीक संग चर्यागीतक कतोक गीतक छन्दक अद्भुत साम्य देखि पड़ैत अछि। महिण्ड (महिधर वा महीन्द्र) रचित गीत (चर्यागीत—16) तथा सरह रचित गीत (चर्यागीत—39) मे तिरहुति प्रभेदक अनुसार छन्द विधान, ध्रुवपद तथा भासपूरक 'रे' केर प्रयोग अछि। भुसुक (चर्यागीत—43) तथा शवर (चर्यागीत—50) के गीतमे से हो 'रे' केर प्रयोग भेल अछि। 'रे' केर प्रचुर प्रयोग मैथिली गीत-परम्परामे होइत रहल अछि आ आँखन होइत अछि।

जाहि कालमे जयदेव संस्कृतमे गीत गोविन्दक रचना कयल, ठीक ओही काल-सन्निधिमे विक्रमशिला महाविहारमे एकटा बौद्ध चिन्तक विनय श्री कें प्राक् मैथिलीमे गीत-रचना करैत देखैत छियनि। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन तिब्बतक बौद्ध हस्तलेख-भण्डारसँ विनयश्रीक एहि गीत सभक उद्धार कयलनि। विनयश्रीक गणना चौरासी सिद्धमे नहि कयल जाइछ परन्तु हुनक गीतमे चर्यागीतक समस्त विशेषता विद्यमान अछि। आगाँ तेरहम-चौदहम शताब्दीक सन्धि कालमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर ठाकुर कें धूर्तसमागत प्रहसनमे देशी (मैथिलीं) भाषाक गीतक प्रयोग करैत देखैत छियनि। धूर्त-समागमक मैथिली गीत सभमे राग-तालक निर्देश, ध्रुवपदक प्रयोग, मात्रिक छन्द, चरण-युग्मसे अन्त्यानुप्रास तथा गीतक चरण वा उपान्तक चरणमे कविक ओ हुनक आश्रयदाताक नामक उल्लेख भेटैत अछि। ज्योतिरीश्वरक गीतमे पूर्वपरम्पराक अपेक्षा किछु नवीन तत्व सेहो दृष्टिगोचर होइछ। गीत सबसे रागक संग तालक सेहो निर्देश अछि। दोसर अभिनव बात अछि,

भणितामे आश्रयदाता, पोषक वा प्रशंसकक उल्लेख । चर्यागीतमे भास-पूरक 'रे' क प्रयोग अछि तँ एहू ठाम दुई गीतमे क्रमशः 'आ' एवं 'रे आ'क प्रयोग देखल जाइछ । धूर्त्त समागमक एक गोट गीतमे नारी-सौन्दर्यक वर्णन भेल अछि जाहि पर जयदेवक प्रभाव अवश्य परिलक्षित होइत अछि परन्तु अन्य गीतमे स्थानीयताक रंग विशेष अछि । समग्र रूपमे देखला पर धूर्त्तसमागमक गीत सब गीतक मैथिल परम्पराक स्पष्ट संकेत दैत अछि ।

ज्योतिरीश्वर मैथिली गद्य ओ नाटकहिक रचनामे सिद्धहस्त नहि छलाह अपितु पद्यो-रचनामे अवाध गति छलनि । ई विश्नसनीय नहि लगैत अछि जे ओ केवल धूर्त्तसमागमहिक हेतु गीत रचने होथि । अवश्ये बहुशः मुक्तक कोटिक गीतक रचना कयने होयताह जे प्रायः विद्यापतिक गीतक समूहमे मिश्रित-विस्मृत भऽ गेल होयत । एहि अनुमानक आधार अछि ।

बंगालक वैष्णव पद-संग्रह सबमे नायिकाक सौन्दर्य वर्णन विषयक एक गोट गीत-विद्यापतिक भणितामे भेटैत अछि —

कबरी भयें चामर गिरि कन्दर मुख भयें चाँद अकासे ।
हरिणि नयन भयें स्वर भयें कोकिल गति भयें गज वनवासे ॥

इत्यादि ।

एहि गीतक भाव किछु व्यतिक्रमक संग वर्णरत्नाकरक नायिका-वर्णनसँ ग्रहण कयल गेल अछि । सबसँ उल्लेखनीय तथ्य ई अछि जे 'कीर्त्तनानन्द' नामक पद-संग्रहमे एहि गीतक भविता में 'कवि शेखरक नाम पाओल जाइत अछि आ ई सर्वविदित अछि जे ज्योतिरीश्वरक उपाधि 'कविशेखर' छलनि जकर प्रयोग धूर्त्तसमागमक गीतक भणिता सबमे कवि- नामक रूपमे भेल अछि, यथा —

'कविशेखर एहु भान रे आ ।
हरि पय भगत गणेसर जान रे आ ।।'

'भने कविशेखर सुनहु रे लोकहे ओझा दरसन देबे ।
महामन्ति जीवतु गणेस रे सीस बीस भले सब जस लेबे ।।

तँ की, ई गीत ज्योतिरीश्वरक थिकनि ?

एहि प्रसंगमे एकटा और गीत विचारणीय अछि । नेपाल पदावलीमे दस चरणक एकटा विद्यापति-भणित गीत अछि जाहिमे वृद्धवेश्याक विगत वयस, विकृत स्वरूप एवं अतीतक कुकृत्यजन्य अनुतापक वर्णन अछि । नगेन्द्रनाथ गुप्त एहि गीतक अन्य पाठ देने छथि जाहिमे आरम्भक छओ चरण ओ मध्यमे दुइ चरण अधिक अछि (द्रष्टव्य, विद्यापति पदावली, भाग—1, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पृ० 48—49) । एहि अधिक चरणक संयोग सँ गीत कुट्टनी-वर्णन विषयक भऽ गेल अछि । वृद्धावेश्या स्वयं कहैत अछि—

हमे धनि कुटनि परिनति नारि ।
वैसहु वास न कहों विचारि ।।
काहुके पान काहुदिअ सान ।।
कतन हकारि कएल अपमान ।। इत्यादि ।

एहि समस्त गीतक भाव धूर्त्तसमागमक विगत यौवना वेश्या सुरत-प्रियाक प्रवेशगीत, स्नातक द्वारा सुरतप्रियाक कुचेष्टागीत तथा वर्णरत्नाकरक कुट्टनी वर्णन सँ अद्भुत साम्य रखैत अछि । वृद्धावेश्याक ई आत्मोक्ति धूर्त्तसमागममे ओहि स्थलक हेतु सर्वथा उपयुक्त अछि जखन सुरत-प्रिया मंच पर प्रवेश कऽ अपन परिचय दैत अछि । एहिसँ ई अनुमान करब सम्भव अछि जे ज्योतिरीश्वर रचित वृद्धावेश्या-वर्णन विषयक कोनो गीत विद्यापति-नामांकित भऽ गेल अथवा विद्यापतिहिक एतद्विषयक गीतक संग मिश्रित भऽ गेल । प्रमाणाभावें एहिसँ अधिक नहि किछु कहल जा सकैत अछि ।

ज्योतिरीश्वरक पश्चात् साहित्य-क्षितिज पर विद्यापतिक अवतरण होइत अछि । विद्यापतिक समक्ष शृंगार रस सँ ओत-प्रोत जयदेवक गीत गोविन्द, चर्यापद, विनय श्री ओ ज्योतिरीश्वरक गीतक परम्पराक संगहि समकालिक

मिथिला मे शास्त्रीय संगीत, बिभिन्न राग मे प्रयोज्य देशी भाषाक गीत ओ मिथिला देशीय लोक व्यवहारक विविध भासभावमय लोक गीतक आदर्श छलनि। एहि सभक समवायिक प्रभाव ओ प्रेरणाक प्रतिफलन भेल विद्यापतिक अजस्र गीत-रचना। 'विद्यापति गीत गोविन्दहिक प्रभाव-प्रेरणा सँ ओकरहि अनुकरण पर गीत-रचना कयल' एहि सिद्धांत केँ मानि लेला पर विद्यापतिक गीत काव्य मे निहित अनेक विशिष्ट तत्वक व्याख्या करब सम्भव नहि होयत। विद्यापतिक गीत-समूह मे झूमरि, नचारी, महेशवाणी, जोग, उचिती, बट गवनी, परिछनि, कोबर, बरहमासा, दृश्यकूट इत्यादि गीत-प्रभेद; शिव, भगवती, ओ गंगाक प्रति भक्ति भावक गीत; वैराग्य भावक शान्ति पद प्रभृति कोटिक गीत-रचनाक प्रेरणाओ आदर्श गीत गोविन्द मे कहाँ भेटैत अछि। विद्यापतिक शृंगार रसहुक गीत सब मे विषयक जे व्यापकता ओ बहुरूपता तथा विविध भासक अनुकूल छन्दक जे वैविध्य भेटैत अछि, से गीत-गोविन्द मे कहाँ अछि। विद्यापतिक गीत सबमे भास-पूरक शब्द प्रयोग बहुतो ठाम देखल जाइत अछि। विद्यापतिक प्राचीन प्रामाणिक स्रोत रामभद्र पुर-संग्रह, नेपाल पदावली, भाषा गीत संग्रह, रागतरंगिणी, तरौनी तालपत्र इत्यादिक बहुतो गीत सबमे भास-पूरक अनेक वर्ण, यथा-आरे, ओरे, कि आरे, कि ओरे, रे, लो, हे इत्यादिक प्रयोग प्रचुरतया देखल जाइछ। विद्यापतिक, समसामयिक, कवि अमृतकरक गीत मे 'रे' तथा विष्णुपुरीक गीत 'लो' क प्रयोग अछि। परवर्त्ती कवि लोकनिक गीत मे भासपूरक वर्ण ओ शब्दक प्रयोगक क्रमिक विस्तार ओ वैविध्य देखल जाइछ, जेना-ना, नारे, नारे की, रे रे, गे सखि, रे रे माइहे, एगे माइहे, ओ ए साजनि इत्यादि। निश्चित रूप सँ कहल जा सकैत अछि जे विद्यापति एवं अन्य कवि लोकनिक गीतक भास पूरक वर्ण ओ शब्दक स्रोत गीत-गोविन्द नहि अपितु लोक-व्यवहारक गीत सब छल।

मिथिलाक लोक व्यवहारक गीतक भास एवं ओकर छन्दक प्रयोग मैथिली गीत काव्य मे निरन्तर बढ़ैत गेल अछि। लोक गीतक भास-छन्द ओ तकर

वर्ण्य वस्तुक अनुसरण सँ अनेक अभिनव गीत प्रभेदक विकास होइत गेल। एहि भास-पूरक वर्ण ओ शब्दक प्रयोग सँ अर्थ मे वृद्धि वा व्यतिरेक तँ नहि होइछ परन्तु एहि सँ गीतक भास, छन्द, वर्ण्य-विषयक संगहि गीतक प्रभेदक अभिज्ञान भऽ जाइछ जे कोनो गीत कोन प्रभेदक थिक, यथा रे की, नारे की सँ ललनी, ललना, ललना रे सँ सोहर, सजनी, सजनी गे, सखि हे, ननदी सँ बटगवनी, होरे, हो होरे सँ चैत वा चैतावरि, आरे, आ आरे सँ उदासी-समदाउनि, हे, अहे, आगे माइ, माइहे सँ नचारी महेशवाणी, ओ रे, माधव, हरि हे सँ मान ओ बिरह इत्यादि गीत-प्रभेद बोधित भऽ जाइछ।

निष्कर्षतः ई कहब उचित अछि जे विद्यापति अपन गीत-रचना मे गीत-गोविन्दक विषय ओ गीत-तत्वक संगहि मैथिल परम्पराक गीत-पद्धति, लोक-व्यवहारक गीत एवं लोक गीतक विषय, छन्द, भास इत्यादिक संयोग सँ एकटा अभिनव गीत-शैलीक आविष्कार कयलनि जे मिथिला सहित प्राच्य भारतक विभिन्न जनपद मे रसि-बसि गेल तथा परवर्त्ती कवि समुदायक हेतु कतोक शताब्दी धरि अविचल आदर्श ओ अनुकरणीय पद्धति बनल रहल।

मिथिला मे परवर्त्ती मैथिली कवि विद्यापतिक आदर्श पर अजस्र गीतक रचना करैत रहलाह। विद्यापतिक तिरहुति, मान, प्रथम समागम, सम्भोग, विरह, नचारी, महेशवाणी, दृश्यकूट इत्यादिक अनुसरण तँ भेले संगहि एहि सब सँ औरो अभिनव गीत-प्रभेद सभक विकास भेल।

मैथिली गीतक विकासक प्रसंग एक गोट और तथ्य उल्लेखनीय अछि। लोक-व्यवहार ओ लोक गीतक विषय, छन्द ओ भासक प्रति विद्यापतिक जे रुझान छल से परवर्त्ती कवि लोकनि कें लौकिक गीत शैलीक अधिकाधिक साहित्यिक प्रयोग करबाक प्रेरणा देलक। परिणामतः परवर्त्ती मैथिली साहित्य मे लगनी, सोहर, परिछनि, कोबर, उचिती, जाग, बटगवनी, आगन्तु, दण्डक, समदाउनि, उदासी, निर्गुण, प्राती, रास, गोआलरी, मलार, बरमासा, छओमासा, चौमासा, होरी, चैतावरि, कजरी, विष्णुपदे इत्यादिक

तथा एकर भेदोक भेदक प्रयोग ओ विकास भेल। ई सब यदि मैथिली लोक गीतक प्रकार थिक तँ साहित्यिको गीतक प्रकारक रूपमे स्थापित भऽ गेल। लोक-व्यवहारक गीतक प्रति मैथिली कवि लोकनिक उत्साह सतत बढ़ि गेल जे ओ लोकनि विवाह सम्बन्धी एक-एक विधिक हेतु प्रयोज्य गीतक विषय ओ मासक आधार लऽ गीतक रचना करऽ लगलाह जाहि मे श्रृंगार रसक विभिन्न पक्षक अनुरणनक संगहि लोक व्यवहारक अभिव्यंजना होइत रहल। अठारहम-उनैसम शताब्दी मे मैथिली गीत पर कबीर, सूर ओ तुलसीक प्रभाव सेहो देखि पड़ैत अछि। एहि सँ मैथिली गीतक वर्ण्य विषय तँ प्रभावित भेले, संगहि भाषा जन्य स्खलन सेहो क्रमशः बढ़ैत गेल।

मैथिली गीतक भाव-भूमिक दृष्टिएँ सामान्यतः तीन गोट वर्ग भऽ सकैत अछि (क) रस पक्षक गीत (ख) भक्ति पक्षक गीत ओ व्यवहार पक्षक गीत। व्यवहार पक्षक गीत मे लोक-व्यवहारक विभिन्न विधि-आचारक विवृतिक संग कतहु श्रृंगारक अवक्षेपण होइत अछि तँ कतहु भक्तिक।

आरम्भ सँ लऽ उनैसम शताब्दी धरि प्रयोगक दृष्टिएँ दुइ कोटिक गीतक रचना होइत रहल: (क) नाटकक गीत तथा (ख) मुक्तक गीत। मिथिला मे ज्योतिरीश्वर सँ लऽ उनैसम शताब्दी धरि जे नाटक रचित भेल, ताहि मे सामान्य कथोपकथन संस्कृत ओ प्राकृत मे रहैत छल तथा पात्र-पात्रीक विशिष्ट संवाद, कथानक ओ घटनाक विवरण सब मैथिली गीत मे रहैत छल।

प्रमुख नाटककार गोविन्द, उमापति, रामदास, रमापति, नन्दी पति, कवि लाल, रत्नपाणि; भानुनाथ, हर्षनाथ इत्यादि नाट्य गीत सँ इतर मुक्तक गीतक सेहो प्रचुर परिमाण मे रचना कयने छलाह। हिनक मुक्तक गीतक संगहि नाट्य गीत हुक प्रचार समाज मे खूब भेल। एहन नाट्य गीत सब मुक्तक गीतहि जकाँ लोकप्रिय अछि। अनुसंधान मे बहुतो एहन गीत सब भेटल अछि जे कोनो ने कोनो नाट्य वस्तुक सन्दर्भक आश्रित लगैत अछि। अमृतक

एक गीत सब मे वत्सराज, सगारिका ओ वासवदत्ताक उल्लेख भेटैत अछि तँ भीषम कविक गीत स्वर्गक सर्वस्व उर्वशीक वर्णन भेटैत अछि। एहि सँ अनुमान होइछ जे अमृतकरक 'रत्नावली नाटिक'क तथा भीषमक 'विक्रमोर्वशीय' नाटकक कथानक पर आधृत नाटक रहल होयत। एहिना आनो कविक गीत सब मे कतोक एहन अछि जे नाट्य सन्दर्भयुक्त प्रतीत होइछ।

विद्यापतिक समकाल ओ परवर्त्ती काल मे मुक्तक गीत-काव्यक रचना कयनिहारक अविराम परम्परा भेटैत अछि जाहि मे विद्यापतिक भाव, भाषा, छन्द ओ अभिव्यंजना शैलीक गम्भीर प्रभाव पड़ल। यदि ई कहल जाय जे विद्यापतिहिक अनुकरण पर गीत-रचना होइत रहल तँ से बसी उपयुक्त होयत। यैह कारण अछि जे बहुतो अन्य कविक गीत सब विद्यापतिहिक नाम पर प्रसिद्ध भऽ गेल।

विद्यापतिक ई प्रभाव केवल मिथिले नहि अपितु बंगाल, उड़ीसा, असम ओ नेपालहु मे विस्तार पौलक। बंगाल ओ उड़ीसा मे गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायक मधुर रसक अनुकूल होयबाक कारणों विद्यापतिक गीत सब अत्यन्त आदृत भेल तथा ओकरा अनुकरण पर गीत-रचना करबाक व्यापक प्रवृत्ति वैष्णव कवि लोकनि मे भेलनि। एहि सँ एकटा विशिष्ट वैष्णव काव्यक विकास भेल जकरा ब्रजबुलि काव्यक नाम सँ जानल जाइत अछि। ब्रजबुलि मे यशोराज खाँ, ज्ञानदास, बलरामदास, राय रामानन्द, चम्पति राय, नरोत्तमदास, राय शेखर इत्यादि विशिष्ट कवि सब भऽ गेल छथि। विद्यापतिक प्रभाव बंगाल मे ततेक गम्भीर पड़ल जे विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरो अपन आरम्भिक गीत रचना भानु सिंह ठाकुरक नाम सँ ब्रजबुलिए मे कयने छलाह। असम प्रदेश मे महापुरुष शंकर देव वैष्णव धर्मक प्रचारक साधनक रूप मे नाट्य प्रदर्शनक आश्रय लेल। तदर्थ रचित नाटक कें अंकीया नाट कहल जाइछ। अंकीया नाट मे असमी सँ भिन्न मैथिली भाषाक प्रयोग कयल जाइत छल। अंकीया नाट मे गद्य-संलाप ओ गीतक प्रयोग होइत छल। नाटकक अतिरिक्त शंकर

देब मुक्तक गीतक सेहो रचना कयल जकरा बर गीत कहल जाइछ। बर गीत हुक भाषा असमी नहि अपितु ब्रजबुलियिक शंकर देबक गीत पर विद्यापतिक भाषा, छन्द ओ शैलीक प्रभाव देखऽ मे अबैत अछि। असम मे रचित गीत दुइ कोटिक अछि—अंकीया नाट मे प्रयुक्त गीत जकरा अंकेर गीत कहल जाइछ तथा बर गीत। बर गीत मे कविक कृष्णक प्रति दास्य भक्ति ओ आत्मसमर्पणक भाव रहैत अछि। कतोक बर गीत मे गोपी लोकनिक विरहदशाक बड़ मार्मिक वर्णन भेल अछि। शंकर देवक बर गीतक अतिरिक्त हुनक शिष्य माधव देवक बर गीत कें सेहो असमक बैष्णव सम्प्रदाय मे बड़ श्रद्धा सँ पाठ ओ गान कयल जाइछ।

विद्यापतिक प्रभाव-परम्परा ओ मैथिली साहित्यक विकास मे नेपालक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। एहि ठामक राज्याश्रय मे मैथिली साहित्यक समृद्धि भेल। सोलहम, सतरहम ओ अठारहम शताब्दी धरि अनवरत साहित्य रचना होइत रहल। नेपाल मे दुइ कोटिक साहित्य रचित भेल—नाटक ओ गीत। नेपालक नाटक मे गीतक प्रचुर प्रयोग देखल जाइत अछि। नाटक सँ फराक मुक्तक गीत हुक रचना प्रचुर परिमाण मे भेल। एहि ठामक नाटक गीत ओ मुक्तक गीतक भाव, भाषा, छन्द ओ अभिव्यंजना शैली विद्यापति ओ मिथिलाक अन्य कविक रचना सँ सर्वथा अनुरूपता रखैत रहल। नेपालक कवि लोकनि मे किछु कविक नाटक ओ गीत, उभय कोटिक रचना भेटैत अछि आ किछु कविक केवल गीत-रचना मात्र अछि। नेपालक मुक्तक गीतक रचयिता मे विशिष्ट स्थान रखनिहार छथि जगज्ज्योतिर्मल्ल, सिद्धिनरसिंह मल्ल, श्री निवासमल्ल, जग प्रकाश मल्ल, भूपतीन्द्र मल्ल, प्रताप मल्ल इत्यादि। एहि सब मे जगज्ज्योतिर्मल्ल विषय व्यापकता, काव्य गुण, गीतक प्रकार ओ परिमाण मे सर्वश्रेष्ठ स्थान रखैत छथि।

मिथिला मे मैथिली गीत काव्यक मुख्य धारा प्रवहमान रहल। मिथिलाक जाहि कवि-नाटककार लोकनिक गीत-रचयिताक रूप मे ऊपर चर्चा भेल अछि

ताहि सँ भिन्न, गीत-रचना द्वारा साहित्य केँ समृद्ध कयनिहार कवि गण मे उल्लेखनीय छथि विष्णुपुरी, गजसिंह, लक्ष्मीनाथ कंसनारायण, गोविन्द दास, सदानन्द, चतुर चतुर्भुज, लोचन, कविशेखर भंजन, मनबोध, साहेबराम दास, करण श्याम, सुवंशलाल, आदिनाथ इत्यादि।

विद्यापतिक काव्य-परम्पराक अन्तिम कविक रूपमे कविशेखरक नाम लेल जाइत छनि। एकर तात्पर्य ई नहि जे पश्चात् कालमे ओहि परिपाटीक सर्वथा लोप भऽ गेल। अवश्ये बादो मे पारम्परिक गीतक रचना होइत रहल परन्तु ओ लोकरुचि ओ साहित्य-प्रवृत्तिक मुख्यधारा सँ दूर भऽ गेल। उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे कवीश्वर चन्दा झा मैथिली साहित्यक संगहि मैथिली गीतहुकेँ नव दिशा प्रदान कयलनि। विद्यापति, गोविन्ददास, जगज्ज्योतिर्म्मल, साहेबरामदास ओ लक्ष्मीनाथ गोसाञिक पश्चात् कतोक शतक संख्यामे गीतक रचना कयनिहार कविश्वर चन्दा भेलाह। पूर्ववर्ती गीतकाव्यक श्रृंगार प्रवणता सँ हटि मैथिली गीतकेँ भक्ति, सामाजिक परिवेश, देश दशा ओ आत्मानुभूतिक अभिव्यंजनाक सशक्त माध्यम बना देलनि। नवीन भाव, नवीन भाषा ओ नवीन भास-छन्दक पुष्कल प्रयोग द्वारा मैथिली गीत-काव्यक धाराकेँ चर्वित-चर्वणताक पारम्परिक परिधि सँ मुक्त कऽ ओहिमे अभिनव प्राणवत्ता केँ प्रतिष्ठित कयलनि। कवीश्वरक शिवलीला विषयक गीतमे माधुर्य अछि, मसृणता अछि, कवि-चित्तक आनन्दोल्लासक उन्मुक्त अभिव्यंजना अछि तँ देश-दशा व्यंजक गीतमे देश, समाज ओ व्यक्तिक पतनशीलताक प्रति क्षोभ पीड़ा तथा ओहिसँ मुक्तिक प्रति उत्कट आकांक्षा सेहो अछि। कवीश्वरक आत्म-निवेदन गीतमे असीम विषाद, महत नैराश्य, दुर्निवार मनश्चिन्ता, प्रतिक्षण उद्भूत आत्मग्लानि, वर्धिष्णु विरक्तिक अभिव्यंजना देखल जाइछ। कवीश्वर चन्दाझाक गीतमे वैयक्तिक अनुभूतिक अनुगुंजन भेटैत अछि। कविक आत्मवेदनाक झंकार सुनबाक पूर्ण अवसर भेटैत अछि हुनक गीतमे। वस्तुतः कवीश्वरक श्रेष्ठतम गीत ओ थिकनि जाहिमे हुनक वैयक्तिक अनुभूति ओ आत्मवेदनाक सहज अभिव्यक्ति भेल अछि।

विद्यापतिक पश्चात् ओ कवीश्वर चन्दा झा सँ पूर्वक अन्तरालमे मैथिली गीतक विकासक दिग्दर्शन-निदर्शन प्रस्तुत संग्रहक उद्देश्य अछि। एहि संग्रहमे नाट्यगीत सँ विरत रहैत केवल मुक्तकें गीतकें स्थान देल गेल अछि। अवश्ये अनेक विशिष्ट गीतकार एहिमे नहि आबि सकल छथि तकरा हेतु कोनो विशेष कारण नहि कहल जा सकैछ। तीन गोट नाटककारक मुक्तक गीत ग्रहण करबाक कारण अछि; उमापतिक गीतक प्रसिद्धि ओ लोकप्रियता; जगज्ज्योतिर्म्मल्लक मुक्तक गीतक प्राचुर्य ओ अभिनव भाव-भूमिक वैशिष्ट्य तथा हर्षनाथक गीतक लोकप्रियता एवं विद्यापति-गीत-सरणिक अन्तिम-बिन्दुता। अमृतकर कतोक गीत नाट्यगीत लगैत अछि परन्तु नाटक उपलब्ध नहि अछि। यदि एहन गीत सब मुक्तके गीत होतँ तँ विशिष्टता मानल जायत। विद्यापतिक समकालीन ओ गीतकारक परम्परामे सब सँ प्राचीन होयबाक कारणे अमृतकरक ऐतिहासिक महत्त्व अछि। अतः अमृतकर सँ एहि संग्रहक आरम्भ ओ हर्षनाथक संग समापन भेल अछि।

सुकवि अमृतकर

अमृतकर छलाह करणकायस्थक प्रसिद्ध श्रीधर ठक्कुरक वंशज चन्द्रकरक पुत्र। कहल जाइछ जे ओ महाराज शिवसिंहक मन्त्री छलाह। अमृतकर अपन गीतक भणितामे शिवसिंह लखिमा, भैरवसिंह-जसमा तथा वीरेश्वर-मधुमतीक उल्लेख कयने छथि। जहिना विद्यापति शिवसिंह सहित ओइनवार वंशक राजागण सँ सम्बद्ध छलाह तहिना अमृतकरो सम्बद्ध छलाह। अतः विद्यापति ओ अमृतकर सर्वथा सम सामयिक छलाहे, संगहि समवयस्क ओ मित्रो रहल होयताह। अमृतकरक प्रशस्तिमे विद्यापति रचित एकगोट तथाकथित पद्य से हो उद्धृत कयल जाइत अछि। एहि पद्यक प्रामाणिकता सन्दिग्ध रहितो उद्धृत कऽ देब असंगत नहि होयत—

नीति निपुण गुण नाह अंकमे अतिशय आगर।
कोष-काव्य-व्याकरण अधिक अधिकारक सागर॥

सबकर कर सम्मान सबहु सौं नेह बढ़ाबिअ।
विप्रदीन अति दुखी सबहुकाँ विपति छोड़ाबिअ॥
कायस्थ माँह सुप्रसिद्ध भउ चन्द्र तुलाऽब शशिधर।
कविकंठहार कल उच्चरइ अमिअ वरिसतइ अमिअकर॥

गीत सभक भणितामे ई अपन नाम' सुकवि अमिअकर' 'सुकवि अमृतकर' अमृतकर 'अमृत' अथवा 'अमिञाकर' रूपमे दैत छथि। अमृतकर गीतमे वत्सराजक सागरिका सँ भेल विरहक वर्णन, सागरिका द्वारा देखल जाइत मदन-पूजनक वर्णन तथा वासवदत्ता द्वारा मदन पूजनक वर्णन कयल गेल अछि। ई सब प्रसंग श्री हर्षरचित रचित 'रत्नावली नाटिका'क कथावस्तुसँ सम्बन्ध रखैत अछि। तँ एहि कथावस्तुसँ सम्बद्ध अमृतकरक कोनो नाटक होयबाक अनुमान कयल जाइछ। हिनक गीतक शैली विद्यापतिक शैलीसँ सर्वथा साम्य रखैत अछि। हिनक गीतमे नायिकाक सौन्दर्य, सखी-शिक्षा, मान, विरह ओ सम्भोगक वर्णन बड़ मनोरम भेल अछि। अलंकारक सहज प्रयोग यदि चित्तकें अह्लादित करैत अछि तँ भाषाक स्वच्छता ओ प्राञ्जलता मोन कें प्रभावित करैत अछि। पन्द्रहम शताब्दीमे वर्त्तमान कवि अमृतकर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एहि हेतु छथि जे ओ विद्यापतिक सम सामयिक, परस्पर सम्पृक्त ओ काव्य-रचनामे समप्रवृत्तिक छलाह। ई एहू बातक प्रमाण अछि जे विद्यापति अपना समयमे देसिल वयनाक एकमात्र कवि नहि छलाह।

विष्णुपुरी

विष्णपुरी गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में अपन 'विष्णु भक्ति रत्नावली' नामक ग्रन्थक कारणे महत्वपूर्ण व्यक्तित्वक रूप मे परिगणित छथि। किंवदन्ती अछि जे महाप्रभु चैतन्य क पत्र द्वारा हिनका सँ 'विष्णु भक्ति रत्नावली' ग्रन्थ याचना कयने छलथिन तथा ओहि पत्रक सम्मान करैत हुनका अपन ग्रन्थ प्रेषित कयने छलथिन। विष्णुपुरी अपना कें 'तैर भुक्त परम हंस' अपना ग्रन्थ मे कहैत छथि। एमहर अनुसन्धान सँ अनेक तथ्य सब प्रकाश मे आयल अछि। तदनुसार

हिनक जन्म तरौनी (दरभंगा) ग्राम मे भेल छलनि। ई श्री धरक पौत्र ओ रतिधरक पुत्र छलाह माताक नाम गौरा छलनि। हिनक यथार्थ नाम रमापति छलनि तथा संन्यास ग्रहणक पश्चात् विष्णुपुरी नामे ख्यात भेलाह। विष्णुपुरीक स्थिति काल 1425 ई० सँ 1500 ई धरि होयबाक अनुमान कयल गेल अछि। अतः ई पन्द्रहम शताब्दी मे विद्यापतिक कनिष्ठ समसामयिक छलाह। विष्णुपुरी वैष्णव दर्शनक चिंतक संन्यासीक संगहि एकटा भक्त कवि सेहो छलाह। मैथिली मे रचित हिनक पाँच गोट गीत आविष्कृत भेल अछि जाहि सब में वैष्णव ओ शैव भक्ति भावनाक अभिव्यक्ति भेल अछि। ई कृष्ण कें 'परमजोति' कहैत छथि तँ शिव कें 'जगत किसान' कहैत छथि, कृष्ण कें 'प्रभु ठाकुर' कहैत छथि तँ 'विष्णुपुरी शिवदासे' सेहो कहैत छथि। कृष्ण-जन्मक वर्णन करैत गोकुल-बासीक उल्लास मे सहभागी होइत छथि, मधुर रसक अनुसरण करैत गोपीक विरहक वर्णनमे विस्मृत भऽ जाइत छथि तँ शिवस्तुति करबा मे मेना ओ पार्वतीक मनोभाव वर्णन करैत आश्वस्तिक अनुभव सेहो करैत छथि। एहि सँ विष्णुपुरीक भक्ति भावनाक समन्वयात्मक रूपक परिचय भेटैत अछि। सरल भाषा मे भावाभिव्यक्ति हिनक सहज गुण अछि। क्वचित अलंकार हुक प्रयोग करैत छथि जे अनायासे हृदय कें स्पर्श करैत अछि। हिनक शिव गीत मे छन्दक वैशिष्ट्य ओ भास-पूरक वर्णक प्रयोग ध्यान देबाक योग्य अछि।

सुकवि सदानन्द

सुकवि सदानन्दक गीत विभिन्न प्राचीन संग्रह सबमे संकलित भेटैत अछि। एहि सँ अनुमान होइछ जे हिनकहु गीत लोकप्रिय छल तथा साहित्य मे कविक रूप मे प्रतिष्ठा प्राप्त छलनि। हिनक 'सुकवि' विशेषण एहि तथ्य कें सम्पुष्ट करैत अछि। रागतरंगिणी, भाषा-गीत संग्रह इत्यादि संगीत-शास्त्रीय ग्रन्थ मे उद्धरण रूप मे जें हिनक गीत देल गेल अछि तें मानऽ पड़त जे शास्त्रीय संगीतक क्षेत्र मे सेहो सदानन्दक गीत कें मान्यता प्राप्त छल। हिनक गीतक भणिता मे कोनो आश्रयदाताक उल्लेख नहि अछि। अतः हिनक परिचय ओ

समयक सम्बन्ध मे अनुमाने कयल जा सकैत अछि। जगज्ज्योतिर्मल्लक 1629 ई० मे रचित हर गौरी विवाह नाटक मे कथावस्तुक अनुरोधें अन्य प्राचीन कविक गीतक संगहि सदानन्द हुक गीत गुम्फित अछि। अतः सतरहम शताब्दी सँ पूर्वहि हिनक आविर्भाव भेल छल, से निश्चित होइछ। प्रदीपकार गोविन्द ठक्कुरक पौत्र जगद्गुरु महामहो सदानन्द छलाह मुदा ओ कवियो छलाह से नहि कहि। करण कायस्थक सीसब मूल मे श्री नारायण मल्लिक ओ अनुमति देथि केर पुत्र सदानन्द भेटैत छथि जनिका पंजी ग्रन्थ मे 'सदानन्दः देवीचरण परायणश्च, महाभक्तः प्रकीर्त्तितः, कहल गेल छनि। सदानन्द कविक गीत मे राज्याश्रयक अनुल्लेख तथा हुनक दुर्गावन्दनाक ओ शिवविषयक भक्ति गीत सँ उपर्युक्त कथनक समर्थन होइत अछि। तँ कायस्थ पंजी मे उल्लिखित सदानन्द केँ मैथिली कवि मानल जा सकैत छनि। एहि आधार पर हिनक समय सोलहम शताब्दीक पूर्वार्द्धक पश्चात् नहि भऽ सकैत अछि। सदानन्दक भक्ति-गीतक अतिरिक्त शृंगार रसहुक गीत भेटैत अछि। एहि मे एकटा गीत गोआलरी प्रभेदक थिक। दोसर गीत मे नायकक प्रवास-गमनक पूर्वक राति मे नायक-नायिकाक सम्भावित विश्लेषक कारणें भेल मनोदशाक अत्यन्त मर्मस्पर्शी वर्णन भेल अछि। सदानन्दक गीत मे भावक अभिव्यक्ति सुस्पष्ट ओ सुव्य-वस्थित अछि। अलंकारक सन्निवेशक आयास नहि अछि। भाषा मे तत्सम शब्द-प्रयोगक प्रवृत्ति दृष्टि गोचर होइछ मुदा तद्भव शब्द-प्रयोगक वर्जना नहि अछि।

सुमति उमापति

उमापति उपाध्यायक स्थितिकाल सोलहम शताब्दीक तेसर चरण सँ सतरहम शताब्दीक पूर्वार्द्धं धरि छल। ई मकवानपुर वा मकमानीक सेनवंशी राजा हिन्दूपति हरिहरइन्द्रसेनक आश्रय मे छलाह। हुनकहि आदेश सँ पारिजातहरण नाटकक रचना कयने छलाह। सेन वंशी लोकनिक राज्य मध्य-काल मे स्वतन्त्र छल तथा एकर विस्तार नेपालक तराइ क्षेत्र सँ ऊपर पर्वतीय

भाग मे पश्चिम सँ पूर्वमे मोरंग धरि छल। ई राज्य अठारहम शताब्दीक अन्तिम चरण मे पृथ्वी नारायण शाह द्वारा विजित भऽ कऽ नेपाल मे अन्तर्भुक्त भऽ गेल। उमापतिक जन्म कोइलखग्राम मे भेल छलनि। पिताक नाम रत्नपति ओ माताक नाम रत्नावती छलनि। उमापति कवि ओ नाटककारक संगहि न्यायशास्त्रक निविष्ट विद्वान् छलाह। हिनक लिखल न्यायशास्त्र विषयक ग्रन्थ 'पदार्थीय दिव्य चक्षु' उपलब्ध अछि। हिनक नामक संग 'सुमति' 'सुगुरु' ओ 'पण्डित मुख्य' विशेषणक प्रयोग भेटैत अछि जाहि सँ हिनक व्यक्तित्वक वैशिष्ट्य सूचित होइत अछि।

कवि पण्डित मुख्य उमापति उपाध्याय मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अत्यन्त लोकप्रिय नाटककार ओ गीतकार थिकाह। हिनक नाटक पारिजात हरण मैथिली कीर्त्तनियाँ नाट्य परम्पराक प्रतिनिधित्व करैत रहल अछि। एहि नाटक मे एहन विशेषता सब निहित अछि जोहि सँ ई सहृदय दर्शक ओ श्रोताक आकर्षण-बिन्दु बनल रहल अछि। पारिजात-हरण नाटकक गीत सब भाव-सम्पत्ति, कल्पनाक कमनीयता, अलंकारक चमत्कृति, माधुर्यादि गुण, पाण्डित्यपूर्ण परिनिष्ठित भाषा ओ लयात्मकता सँ परिपूर्ण अछि। ई गीत सब, नर्त्तक, गायक सँ लय सामन्य जन पर्यन्त मे स्वतन्त्रो रूप सँ लोकप्रिय रहल अछि।

नाटकक अतिरिक्त उमापति मुक्तकगीतहुक रचना कयने छलाह। एहि गीत सभक भाव-भूमि भक्ति ओ शृंगार—उभय पक्षक अछि। भक्ति पक्षक गीत मे देवी-वन्दना, शिव-स्तुति, कृष्ण रूप मे अवतरित विष्णुक स्तवन कयल गेल अछि। एहि गीत सब मे भक्ति भाव सँ अधिक सबल अछि एकर काव्यत्व। शृंगार रसक गीत मे नायक-नायिकाक सौन्दर्य, मान, समागम, विरह इत्यादिक मनोहारी वर्णन भेल अछि। उमापतिक गीत सामान्य रूपें देखला पर विद्यापतिक अनुसरण करैत बुझि पड़ैत अछि परन्तु किंचितो गम्भीर दृष्टि सँ देखला उत्तर भाव, भाषा ओ अभिव्यक्ति शैली मे भिन्नता स्पष्ट भऽ जाइछ

अछि। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास इत्यादि अलंकारक चमत्कार पूर्ण प्रयोग, पदलालित्य, गेयधर्मिता, परिमार्जित ओ अक्लिष्ट संस्कृतनिष्ठ भाषाक सातत्य उमापतिक गीतक सामान्य विशेषता थिक।

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल नेपालक मल्लराजवंशमे उद्‌भूत भक्तपुर शाखाक राजा छलाह। हिनक राजत्वकाल 1613 ई० सँ 1637 ई० धरि छलनि। ई साहित्य-संगीतक प्रेमीए नहि ओकर निष्णात ज्ञाता सेहो छलाह। वंशमणि उपाध्याय ओ चतुरचतुर्भुज सन विशिष्ट विद्वान ओ कवि हिनकहि आश्रयमे छलाह। हिनका सभक सहयोग सँ विभिन्न काव्य, नाटक ओ विभिन्न शास्त्रक दुर्लभ ग्रन्थ सभक संकलन ओ प्रतिलिपि करौलनि। एहि आधार पर अनेक नवो ग्रन्थक रचना कयलनि ओ करबौलनि। जगज्ज्योतिर्म्मल्ल स्वयं काव्य-नाट्य नृत्य-संगीतकलारसिक ओ प्रतिभा सम्पन्न कवि-नाटककार छलाह। हिनक रचित अनेक नाट्यकृति, यथा— हरगौरी विवाह नाटक, कुंजविहार नाटक, मुदित कुवलयाश्व नाटक, दशावतार नृत्यम्, षोडश गीतम् तथा एक गोट गीत संग्रह 'गीत-पंचासिका' प्रकाशमे आबि चुकल अछि। तथापि हिनक अनेक कृति एवं बहुसंख्यक मुक्तक गीत सब एखनहुं अप्रकाशित अछि।

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक साहित्यिक दृष्टिकोण बहुआयामी छल। हिनक गीतक परिमाण विपुल, छल। छन्द ओ विषय वस्तुक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि। राग-भास ओ तालक निर्देश हिनक समस्त गीतमे अवश्ये कयल गेल अछि। कतोक गीतक अंगहुक रूपमे तत्तत् गीतक राग-तालक निर्देश कयल गेल अछि। जगज्ज्योतिर्म्मल्लक गीत-समूहमेनवो रसक अभिव्यंजना भेल अछि जे आन कविमे दुर्लभ अछि। हिनक बहुतो एहन गीत अछि जकर भाव-भूमि सर्वथा अभिनव अछि ओ जकर समानान्तर गीत ने हुनक पूर्ववर्त्तीकालमे, ने परवर्तीकालमे कोनो अन्य कविक भेटैत अछि। शृंगार, भक्ति ओ जगत-जीवन सम्बन्धी आकर्षण-विकर्षणक अनुभूतिक अभिव्यंजना

हिनक गीतमे सामान्य रूपमे भेल अछि । जगज्ज्योतिर्म्मल्लक भक्ति गीतमे शिव, भवानी, गनेश, गगा, सरस्वती, सूर्य, राम, कृष्ण, राधा (गोपी) कृष्ण दशावतार इत्यादि देवी-देवताक स्तवन; वन्दन ओ चरितांकन भेल अछि। जगज्ज्योतिर्म्मल्ल साहित्य ओकला नाटक ओ नृत्य' गीत ओ संगीतकें मनोविलासक उपादान नहि, आराध्यक आराधना ओ हुनक सान्निध्य प्राप्तिक साधन मानैत छथि। विभिन्न देव देवीक श्रद्धा-भक्तिक भाव रखितो हुनक आराध्य छथिन देवाधिदेव महादेव । शक्ति-संयुत शिव । साम्बसदाशिव । यैह कारण अछि जे हुनक श्रृंगारो रसक अधिकांश गीतक समापन मे शिव अथवा भगवतीक कृपा प्रसादक याचना अथवा हुनक महिमाक कीर्त्तन कयल गेल अछि । सरल ओ प्रसाद गुण सम्पन्न भाषामे भावक अभिव्यक्ति हिनक गीत सबमे देखल जाइछ । जगज्ज्योतिर्म्मल्लक समग्र गीत काव्यमे अनुरक्ति, विरक्ति ओ भक्तिक त्रिवेणीक दर्शन होइछ । तीनू भावधाराक गंगा, यमुना ओ सरस्वती जकाँ संगम भेल अछि ।

चतुर चतुर्भुज

चतुर चतुर्भुजक समय सोलहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध ओ सतरहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध सिद्ध अछि । ई छलाह महेशठाकुरक शिष्य प्रसिद्ध पण्डितराय रघुनन्दनक पुत्र । एहि रघुनन्दन रायकें मेदिनी गढ़में शास्त्रार्थमे विजयी होयबाक उपलक्ष्यमे सम्राट अकबर द्वारा पण्डितराजक उपाधिसँ सम्मानित कयल गेल छलनि । कहल जाइछ जे मिथिला राज सेहो हिनकहि प्रदान कयल गेल छल । चतुर चतुर्भज विद्वत्ता ओ कवित्व प्रतिभाक कारणे अनेक राज-सभा मे सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त कयने छलाह । आरम्भिक समय मे ई मोरंगक राजा वीर नारायणक आश्रयमे छलाह । ई वीरनारायण सम्राट जहाँगीर द्वारा 'सिंहदलन' उपाधि सँ सम्मानित भेल छलाह । मोरंगक,पश्चात् ई सेन राजबंशक आश्रय मे मकमानी चल गेलाह । तदुत्तर भक्तपुरक राजा जगज्ज्योतिर्म्मल्लक आश्रय मे चल गेलाह । ओहिठाम हिनका वंशमणिक साहचर्य प्राप्त भेलनि । जग-

ज्योतिर्म्मल्लक मृत्यु (1637) क पश्चात् ललितपुरक राजा सिद्धिनरसिंहमल्लक आश्रयमे चल गेलाह। अनुमान अछि जे प्रायः हिनकहि आश्रयमे रहैत 'भाषा गीत संग्रह' नामक ग्रन्थक सम्पादन, कृष्णचरित नाटक तथा बहुतो गीतक रचना कयलनि। गीत गोविन्दक शैली पर संस्कृतमे रचित 'गीत-गोपाल' नामक काव्यक रचना चतुर चतुर्भुज मोरंग अथवा मकमानी मे कयने छलाह। हिनक किछु गीत बंगलामे सेहो भेटैत अछि। मैथिली मे हिनक बहुशः गीत सब भेटैत अछि। एहि सँ सिद्ध होइछ जे चतुर चतुर्भुज बहुभाषाविज्ञ छलाह।

चतुर चतुर्भुज मध्यकालक एकटा लोकप्रिय गीतकार छलाह तथा हिनक गीतक प्रचार मिथिला ओ नेपालमे खूब छल। यैह कारण अछि जे हिनक गीत मिथिलाक जनकण्ठमे भेटितहि अछि, सगहि रागतरंगिणी ओ नेपालक विभिन्न गीत-संग्रह एवं नाटक मे प्रसंगतः उद्धृत भेटैत अछि।

चतुर चतुर्भुजक कतिपय गीत भक्ति-भावक अछि किन्तु अधिकांश गीत शृंगार रसक अछि। अवश्ये एहिमे राधाकृष्णक वा गोपी-कृष्णक सौन्दर्य, प्रेमोदय, मान, मिलन, विरह इत्यादि प्रमुख अछि। एहन गीतमे मधुर रसक छाह देखि पड़ैत अछि। चतुर चतुर्भुजक गीत मे प्रौढ़ छन्दबन्ध, परिनिष्ठित भाषा, भावक गाम्भीर्य, कल्पनाक सौष्ठव, साङ्ग, रुपक, उपमा, अर्थान्तरन्यास इत्यादि अलंकारक आकर्षक विन्यास भेटैत अछि। पाण्डित्य पूर्णशैलीमे चतुर्भुज कंसनारायणक सभाकवि गोविन्दक समकक्ष लगैत छथि। हिनक अनेक गीत निरलंकृत रहनहु, अत्यन्त सरल ओ सोझ भाषाक माध्यमे सहजता सँ रससृष्टि मे समर्थ अछि।

सिद्धिनरसिंहमल्ल

सिद्धिनरसिंहमल्ल ललितपुरमल्लराज्यक संस्थापक राजा छलाह। ई काठमाण्डूक राजाशिवसिंहक पौत्र ओ हरिहरसिंहक पुत्र छलाह। गर्भआन्हर सन्तानक रूपमे हिनक जन्म 1606 ई० मे भेलनि। हरिहरसिंहक असमय मृत्यु भेला पर शिवसिंह राज्यक दुइ भाग कऽ देलनि। काठमाण्डूक भाग

ज्येष्ठ पौत्र लक्ष्मीनरसिंह मल्लकें दऽ देलनि तथा ललितपुरक भाग हरिहर सिंहक द्वितीय पत्नी लालमतीक गर्भस्थ भावी सन्तानक हेतु सुरक्षित राखि देल। सिद्धिनरसिंह मल्ल चौदह वर्षक अवस्थामे 1620 ई० मे ललितपुरक राजा भेलाह तथा 1661 ई० धरि शासन करैत रहलाह।

सिद्धिनरसिंहमल्ल न्यायप्रिय ओ प्रजापालक राजाक रूपमे ख्यात भेलाह। हिनक मनोवृत्ति सात्त्विक छल तथा राजसुखकें सर्वथा तुच्छ मानैत छलाह। हिनक मन सर्वदा धार्मिक कृत्य, यज्ञादि कर्म, दान एवं तीर्थाटनमे बेसी रमैत छलनि। ई अनेक मन्दिरक निर्माण करौलनि जाहिमे पाटनक कृष्णमन्दिर बड़ प्रसिद्ध अछि। ई कृष्णक संगहि कुलदेवी तलेजु, शिव, लोकेश्वरबुद्धक प्रति सेहो समान रूपसँ भक्ति भाव रखैत छलाह। हिनक तपस्वी जीवनक कारणे हिनका 'जीवन्मुक्त' ओ 'राजर्षि' कहल जाइत छलनि। राजस् जीवन सँ तेना निःस्पृह छलाह जे अपन जीवनहि कालमे अपन पुत्र श्री निवासमल्लकें राज्य-शासनक भार समर्पित कऽ देलनि।

सिद्धिनरसिंहमल्ल काव्य ओ नाट्यकलाकें सेहो प्रश्रय देलनि। हिनकहि आश्रयमे कवि रामभद्र ओ दामोदर छलाह जे 'हरिश्चन्द्र नृत्यम्' ओ' गोपीचन्द्र नाटक' क रचना कयने छलाह। सिद्धिनरसिंहमल्लकें नाटकक अभिनय करयबामे विशेष रुचि रहैत छलनि। हिनकहि आश्रयमे चतुर चतुर्भुज सेहो छलाह जे अपन कतोक गीतक भणितामे हिनक नामोल्लेख कयने छथि। प्रायः सिद्धिनरसिंहक निर्देश पर चतुर्भुज 'भाषा गीत संग्रह' ओ कृष्णचरित्र नाटकक निर्माण कयने छलाह।

सिद्धिनरसिंहमल्ल स्वयं कवि छलाह आ हिनक भणिता सँ एखन दसगोट गीत उपलब्ध अछि। कतोक विद्वान् 'सिंहनृपति' ओ 'नृपसिंह'क भणिता सँ उपलब्ध गीतकें हिनकहि कृति मानैत छथि परन्तु एकरा समर्थनमे कोनो प्रबल प्रमाण नहि अछि। सिद्धि नरसिंह मल्लक उपलब्ध गीतमे भाव, भाषा, छन्द ओ अभिव्यक्ति शैलीक दृष्टिएँ विद्यापतिक अनुसरण

स्पष्ट देखल जाइछ । हिनक समग्र गीतमे श्रृंगार रसक अभिव्यंजना अछि। विशेष रूपसँ मान जन्य विरह ओ खण्डिता नायिकाक विरह दशाक वर्णन बड़ मार्मिक भेल अछि। नारी-सौन्दर्य ओ विरहक वर्णनमे अलंकारक प्रयोग अधिक स्थल पर भेल अछि जाहिमे पारम्परिक उपादानक उपयोग रहनहुँ चारुता अछि। सिद्धिनरसिंहमल्लक जीवन-चर्चाक आलोकमे हिनक काव्यमे भक्तिभावक व्याप्तिक अपेक्षा कयल जा सकैछ किन्तु से स्फुट नहि भऽ पबैत अछि। अवश्य अनेक गीतमे गोपी-कृष्णक प्रेमक वर्णन दृष्टिगोचर होइछ। एहि सबमे वैष्णवीय मधुर रसक स्थिति मानल जा सकैछ, कारण कवि एहि गीत सबमे 'हरिपदजुग भज' कृष्ण चरण विनु दोसर न आन' 'ब्रज सेखर हीरे' सन उक्ति द्वारा समस्त गीतक भावकेँ' गोपी (राधा) कृष्णाक प्रणय-लीला परक बनाय मधुर रसक भूमिका प्रस्तुत कऽ दैत छथि।

लोचन

मैथिली साहित्यक इतिहास मे लोचनक स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। कविक संगहि लोचन संगीत शास्त्रक पारंगत विद्वान छलाह। मिथिलाक संगीत पद्धतिक वैशिष्ट्य सँ अभिज्ञ छलाह तथा संगीत शास्त्र विषयक दुइगोट ग्रन्थ राग संगीत संग्रह ओ रागतरंगिणीक रचना कयने छलाह जाहि मे राग-तरंगिणी मात्र उपलब्ध ओ प्रकाशित अछि। लोचन खण्डवला कुलक राजा महिनाथ ठाकुर 1668-90 ई०) ओ हुनक अनुज नरपति ठाकुर (1690-1703 ई०) क आश्रय मे छलाह। लोचन अपन गीतक भणिता मे एहि दुनू राजाक उल्लेख कयने छथि। परन्तु रागतरंगिणीक रचना 1685 ई० मे नरपति ठाकुरक प्रमोदार्थ कयने छलाह। एहि तरहें लोचनक जीवनकाल सतरहम शताब्दीक उत्तर भाग छल। लोचनकृत रागतरंगिणी मिथिलाक संगीत पद्धतिक ऐतिहासिक परिचय तथा मैथिली साहित्यक इतिहासक दृष्टिएँ अद्वितीय अभिलेखक रूप मे मान्य अछि। एहि मे मिथिला देशीय रागक स्वरूपक विश्लेषण करैत निदर्शनक रूप मिथिला भाषाक गीत सब उद्धत कयल गेल

अछि। एहि रूप मे सतरहम शताब्दी सँ पूर्वक उनतिस गोट कविक एक सय तीन गोट प्रचलित गीत केँ उद्धृत कयल गेल अछि। स्वयं लोचनक संगीतज्ञ रूप सँ भिन्न हुनक कवि रूपक परिचय सेहो एही ग्रन्थ मे उद्धृत गीत सँ भेटैत अछि। लोचन विद्यापतिक काव्य-प्रतिभा, अनिवार प्रसिद्धि ओ व्यापक प्रभाव सँ अभिभूत छलाह। ओ विद्यापतिक प्रशंसके नहि, अपितु भक्त छलाह। लोचनक काव्य-रचनाक आदर्श विद्यापतिए छलथिन। विद्यापतिक गीतक सर्वांगत: अनुकरण कयनिहार लोचनक स्थान अनन्य मानल जा सकैत छनि स्वयं लोचन अपन अधिकतम गीत विद्यापतिक उदाहरण—गीतक पश्चात् दोसर उदाहरणक रूप मे 'ममतु' कहि कऽ उद्धृत कयने छथि। स्वभावत: विद्यापतिक राग, छन्द, भाव, भाषा ओ वर्णन-विन्यास मे अपनाकेँ सर्वथा विद्यापतिक अनुयायी सिद्ध कयलनि अछि। लोचनक एक गोट गीत मात्र भगवतीक वन्दना विषयक छनि। शेष गीतक भावभूमि शृंगार रसात्मक अछि। नायक-नायिकाक रतिभावकेँ सौन्दर्य वर्णन, प्रथम दर्शन, मान, विरह इत्यादिक रूप मे व्यंजित कयल गेल अछि। अलंकार प्रयोग मे पारम्परिक उपमानक उपयोग कयल गेल अछि। विद्यापतिक गीतक अनुसरण होइतो विद्यापतिक गीत मे सहज आह्लादकता भेटैत अछि से लोचनक गीत मे नहि। लोचनक गीत मे काव्य शास्त्रीय उपादानक पूर्त्ति रहितो कृत्रिमता झलकि उठैत अछि। एतबा होइतो लोचन मैथिली गीत परम्पराक मध्यवर्त्ती स्तम्भ छथि ताहि मे सन्देह नहि।

सन्त साहेबरामदास

साहेबरामदास बैरागी वैष्णव सन्त छलाह तथा मिथिलाक सन्त-परम्परा मे हिनक अत्यन्त उच्च स्थान छनि। ई अपन एक गोट गीत मे खण्डवला कुलक राजा नरेन्द्र सिंह (1741-61 ई० क कल्याण-कामना कयने छथि— 'साहेबगिरिधर हरहु नरेन्द्र दुख करहु सुखित मिथिलेशहि रे की'। राजानरेन्द्र सिंह ओ हुनक रानी पद्मावती साहेबरामकेँ धर्मार्थ भूमिदानक यत्ने छलथिन तकर

प्रमाण अछि । सन 1153 साल (1745 ई०) मे हिनक गीतावलीक संकलन अभिलिखित अछि । अतः हिनक स्थिति काल अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध निश्चित होइत अछि । साहेबरामदासक जन्म जरैल परगनाक कुसुमौल ग्राम मे भेल छलनि । अपन एकमात्र पुत्र प्रीतमक आकस्मिक मृत्यु भेला पर ई संसार सँ विरक्त भऽ वैराग्य धारण कऽ लेलनि । विभिन्न तीर्थक भ्रमण करबाक क्रम मे दण्ड प्रणाम दैत जगन्नाथपुरीक यात्रा कयलनि । कहल जाइछ जे ओहि ठाम हिनका भगवानक दर्शन भेलनि । मिथिला अयला पर एक गोट बाल-बैरागी सन्त बलिरामदासक शिष्य भऽ हुनका सँ योग-साधनाक शिक्षा प्राप्त कयलनि । हिनक योग सिद्धक चमत्कारक सम्बन्ध मे अनेक किंवदन्ती समाज मे प्रचलित अछि । साहेबरामदास अपन एकान्त साधनाक हेतु अनेक स्थान पर पाकड़िक गाछ रोपिकऽ कुटी बनौलनि, यथा—एकमा-बसन्तपुर, भखरौल-पचही, कृष्णपुर-बइसाम, बैरिया-आलापुर, सड़रा, जमैला, पचाढ़ी-पिण्डारुछ । ई जाहि-जाहि स्थान पर कुटी बनौलनि से स्थान सब वैष्णव मठक रूप मे प्रतिष्ठित भऽ गेल । एहि मे सब सँ प्रधान ओ प्रतिष्ठित अछि पचाढ़ीमठ, कारण एही ठाम महात्माजीक समाधि छनि ।

साहेबरामदासक पौने पाँच सय गीतक संग्रह कवीश्वर चन्दा झाक प्रयत्न सँ शकाब्द 1825 (1903 ई०) मे दरभंगा सँ प्रकाशित भेल छल । हिनक बहुसंख्यक गीत समाज मे खूब प्रचलित भेल । साहेबरामक गीत सब राग भास ओ ताल मे निबद्ध देखल जाइत अछि । वर्ण्य विषय ओ भासक दृष्टिएँ हिनक गीत काव्य अत्यन्त समृद्ध अछि । शास्त्रीय राग-रागिणीक आधार पर रचित गीतक अतिरिक्त लोकव्यवहारक गीतक भास पर रचित गीत तिरहुति, सोहर, समदाओनि, प्राती, होरी, चैत वा चैतावरि, मलार, रास, गोआलरी, उदासी, निर्गुण इत्यादिक प्राचुर्य अछि । साहेबरामक गीत एकटा विशिष्ट शैलीप्रतिभासित होइछ जकरा 'साहेबरामनी' वा 'साहेबरामी' नाम सँ अभिहित कयल गेल अछि । कवीश्वर चन्दा झा सेहो हुनक गीत अनुकरण मे 'साहेबराम रीति' कहि कऽ कतोक गीतक रचना कयने छलाह ।

साहेबरामक गीतक भाषा मे एक रूपताक निर्वाह नहि अछि। किछु गीत विशुद्ध मिथिला भाषा मे अछि तँ किछु गीत ब्रज भाषा मे अछि। ब्रजभाषा गीत मे मैथिलीक पद घुसिआयल अछि तँ कतोक मैथिली गीत मे ब्रजभाषाक छिटका पड़ल अछि। किछु गीत मे भाषाक मिश्रण तेना अछि जे ई निर्णय करब कठिन भऽ जाइछ जे एहन गीत मैथिलीक मानल जाय वा ब्रजभाषाक। एकर कारण अछि जे मिथिलाक वैष्णव वैरागी सन्त लोकनि कृष्णक गोकुल-बृन्दावन ओ श्रीरामक अयोध्या सँ बेसी सम्पृक्त रहलाह। सूरक कृष्ण काव्य तथा तुलसीक राम काव्यक प्रति असीम श्रद्धाभाव सँ आविष्ट रहैत रहलाह। किछु सन्त कबीर पन्थक अनुयायी छलाह तथा कबीरक कृतिकेँ पूज्य स्थान दैत छलाह। फलतः एहि सन्त लोकनिक दैनन्दिन प्रयोगक भाषा ओ काव्य-रचनाक भाषा पर ब्रज-अवधीक गम्भीर प्रभाव पड़ैत रहल। मिथिलाक एहि वैरागी सन्तलोकनिक मातृभाषा मैथिली ओ मध्यदेशक भाषाक मिश्रण निरन्तर होइत रहल। एहि मिश्रण सँ भाषाक जे स्वरूप बनल तकरा समाज मे 'बबजिआ बोली' कहल जाय लागल। शिष्टरूप मे एकरा 'वैरागी भाखा' कहब उपयुक्त होयत। एहि वैरागी भाखाक प्रयोग साहेबरामक गीत मे भेटैत अछि।

जीवनक क्षणभंगुरता, संसारक निस्सारता, परमब्रह्मक अभिव्यक्त स्वरूप, रहस्यवादी चिन्तन, ब्रह्मानन्दक अनिर्वचनीयता, भक्ति तत्व इत्यादि भावपक्ष, गीतक माध्यम सँ भक्ति भावनाक प्रतिपादन, भाषा ओ छन्दक दृष्टिएँ साहेब-रामक गीत मे विद्यापति, कबीर, सूर ओ तुलसीक समवायिक प्रभाव देखल जाइत अछि। राम ओ कृष्ण दुहू परमब्रह्मक साकार अवतार, सगुण रूप थिकाह। अतः दुहू साहेबरामक आराध्य छथि। राम-कृष्णक स्तवन ओ लीला-गान मे ओ सर्वथा तन्मय एवं आत्मविस्मृत भऽ जाइत छथि। एहू मे कृष्णक बाल लीला ओ वृन्दावन लीलाक प्रति कवि-मानस अत्यन्त संवेदनशील अछि। ब्रजवासी गोप, गोपी, ग्वाल-बाल, नन्द-यशोदा इत्यादिक कृष्णक प्रति प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, हर्ष, उल्लास, विरह-व्यथा---सभमे जेना ओ स्वयं सहभागी होथि; कृष्णक प्रत्येक लीलाक प्रत्यक्षदर्शी होथि। साहेबरामक अधिकांश गीतक

वर्ण्यवस्तु अछि कृष्णक अलौकिक सौन्दर्य, महिमा-मंडल, जन्म-प्रकरण, बाल-क्रीड़ा, गोचारण, वंशी-वादन, रास-क्रीड़ा, मथुरा-गमन ओ तत्पश्चात् ब्रजवासीगणक, विशेषत: गोपी लोकनिक विरह-वेदना। एहू मे गोपी-कृष्णक रासलीला तथा कृष्णक मथुरा चल गेला पर गोपी लोकनिक विरहदशाक वर्णन मे साहेबरामक आत्यन्तिक तन्मयता देखल जाइत अछि। साहेबरामदासक गीत मे शब्दाडम्बर नहि, अलंकारक भार नहि, उक्तिक वक्रता वा चमत्कार नहि, लौकिक-अलौकिक जगत ओ जीवन विषयक रहस्यात्मक ग्रन्थिक विश्लेषण मे गूढ़ प्रतीक वा विम्बक योजना नहि अछि, अपितु अछि अपन आराध्यक प्रति सर्वथा समर्पित भक्तक आत्मानुभूतिक सहज, सरल, बोधगम्य भाषा ओ शैली मे लयात्मक अभिव्यक्ति।

मनबोध

'कृष्णजन्म' नामक प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्यक रचयिता महाकवि मनबोधक यथार्थ परिचय विवादास्पद रहल अछि। ग्रियर्सन 'कृष्णजन्मक कर्त्ता भाषा कवि भोलनके' मानैत छथि जनिक अपर नाम हुनका मतें मनबोध छलनि। भाषा कवि भोलन छलाह जमसम ग्रामवासी पवौली बढ़िआम मूलक चानझाक पुत्र। एहि भोलनक विवाह एक गोट भिखारी झाक कन्या मे भेल छल, जाहि भिखारीझाक एक गोट पौत्रक मृत्यु 1878 ई० में भेल छल— ई ग्रियर्सनक कहब छनि। कृष्णजन्मक प्रत्येक अध्यायक अन्त मे रचयिताक नाम मनबोध कहल गेल अछि। परन्तु पँजी मे भाषा कवि भोलनक अपर नाम मनबोध होयबाक कोनो संकेत नहि। म० म० डा० उमेश मिश्र एकटा दोसर मनबोधक परिचय दैत छथि। तदनुसार मङरौनी निवासी पलिबाड़ जमदौली मूलक सोनमणि झाक बालक छलाह ज्योतिर्विद् मनबोध! एहि मनबोधक छोट भाइ छलथिन भैअन ओ कवि लाल प्रसिद्ध भइला। कविलाल गौरी स्वयंवर नाटक ओ कन्दर्पी घाटक युद्ध-वर्णन काव्यक रचयिता मानल जाइत छथि। परन्तु भाषा कवि भोलन ओ ज्योतिर्विद् मनबोध मे सँ के कृष्णजन्मक रचयिता

थिकाह से निश्चयपूर्वक कहबाक स्थिति मे कोनो विद्वान नहि देखि पड़ैत छथि। मनबोधक एक गोट और कृति 'दानलीला' सेहो कहल जाइत अछि। मनबोधक एक गोट गीत भणिता मे नृपति नरेन्द्र सिंहक उल्लेख कयल गेल अछि। एहि आधार पर मनबोधक समय अठारहम शताब्दीक पूर्वार्द्ध वा मध्य निश्चित होइत अछि।

मनबोधक कृष्णजन्म, वर्ण्य विषय, काव्य-रूप, भाषा ओ छन्द-प्रयोगक दृष्टिएँ गीत-परम्परा सँ सर्वथा भिन्न अछि तथा लोकप्रियता मे सेहो एकर विशेष स्थान ओ महत्व अछि। 'पौराणिक प्रबन्ध काव्य कृष्णजन्म सँ भिन्न मनबोधक अनेक मुक्तक गीत सेहो प्रचलित अछि। एकटा गीत मे शिवकेँ सम्बोधित करैत आत्मनिवेदन कयल गेल अछि जाहि मे पश्चात्ताप ओ आत्म-वेदनाक सरल अभिव्यक्ति अछि। दुइ गोट गीत मे नायिकाक विरह-वर्णन भेल अछि जाहि मे एकटाक नायिका तँ स्पष्टे गोपी थिक। परन्तु दो सरहु गीतक भावकेँ गोपी पर आक्षिप्त मानल जा सकैछ। एकटा गीत सोहर अछि जाहि मे कृष्णकजन्म ओ वसुदेव द्वारा हुनका गोकुल पहुँचयबाक वर्णन अछि। सब मिलाकऽ मनबोधक गीत हुमे भक्ति भावहिक दर्शन होइत अछि। मनबोधक गीतक भाषा सरल ओ बोधगम्य अछि किन्तु कृष्णजन्मक भाषा मे तद्भव ओ देशी शब्द, लोकोक्ति ओ उपलक्षणक जे चमत्कारक प्रयोग अछि तकर एहि गीत सब मे अभाव अछि।

हर्षनाथ

कविशेखर हर्षनाथ झा उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धक कवि-नाटककार थिकाह। हिनक जन्म 1844 ई० मे तथा मृत्यु 1898 ई० मे भेलनि। ई संस्कृतक निविष्ट विद्वान छलाह। संस्कृत मे हिनय काव्य, व्याकरण, धर्म-शास्त्र ओ कर्मकाण्ड विषयक मौलिक ओ टीका ग्रन्थ सब छनि। ब्रजभाषा मे सेहो कतोक काव्यक रचना कयने छलाह। मैथिली मे 'उषाहरण' ओ' माधवानन्द' नामक दुइ गोट कीर्त्तनियाँ नाटक तथा अनेकशः उज्झट गीतक

रचना कयने छलाह। कविशेखर हर्षनाथ झा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह तथा हुनक पितियौत बाबू एकरदेश्वर सिंहक आश्रय मे छलाह। एकरदेश्वर सिंहक विनोदार्थ माधवानन्द नाटकक रचना कयने छलाह तथा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहकेँ उषाहरण नाटक ओ अनेक मुक्तक गीत अर्पित कयने छलाह।

हर्षनाथ अत्यन्त लोकप्रिय गीत कार सिद्ध भेलाह। हिनक नाटकक गीत ओ उज्झट गीत सब समाज मे अतिशय प्रचार पौलक। हिनका विद्यापति काव्य-परम्पराक अन्तिम कवि मानल जाइत छनि। कारण, हिनकहि समकालिक किन्तु वयस मे अत्यन्त ज्येष्ठ कवीश्वर चन्दा झा मैथिली साहित्यक नवयुगक द्वार खोललनि तथा मैथिलीक गीतधाराकेँ सर्वथा नवीन दिशा प्रदान कयलनि।

हर्षनाथ नाटकक गीत सँ भिन्न देवी गीत, तिरहुति, मान, प्रथम समागम, विरह, सोहर इत्यादि प्रभेदक गीतक रचना कयने छथि। भाषाक लौकिक वा चलित रूपक अपेक्षा पारम्परिकहि रूपकेँ अंगीकार कऽ ओकरा पाण्डित्य पूर्णबना देने छथि जे कतोक ठाम अर्थबोध मे बाधक सिद्ध होइछ। भाषाक पारम्परिको स्वरूपक परिनिष्ठता सँ उदासीन हेबाक कारणे मैथिली गीत मे ब्रजभाषा-क्रिया पदक वा अन्य पदक प्रयोग करबा मे संकुचित नहि होइत छथि। भाव-पक्षक दृष्टिएँ किछु गीत मे शक्ति ओ किछुगीत मे कृष्णक प्रति भक्ति भावक अभिव्यक्ति भेल अछि। विशेष गीत मे शृंगारक उन्मुक्त प्रवाह अछि। नायक-नायिकाक मान, सम्भोग, विप्रलम्भक वर्णन हिनक गीतक मुख्य वर्ण्य विषय अछि। नायिकाक आंगिक सौन्दर्य अंकन मे कविक विशेष आसक्ति देखल जाइत अछि; से विरहावस्थाक वर्णन पर्यन्त मे कवि नायिकाक आन्तरिक भावोर्मिक अंकनक अपेक्षा ओकर अंगज सौन्दर्यक वर्णन मे अपन समग्र प्रतिभा ओ कल्पान शक्तिकेँ लगा दैत छथि। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, काव्य लिंग, अर्थान्तरन्यास, समासोक्ति इत्यादि अलंकारक अतिशय प्रयोग हर्षनाथक गीत मे भेटैत अछि। अलंकारक प्रयोग द्वारा आकर्षक बिम्बक विन्यास मे कवि सिद्ध हस्त छथि। हिनक गीत मे माधुर्यगुणक

सर्वत्र विनिवेश भेटैत अछि। विद्यापति-गीत-परम्पराक अन्तिम कवि हर्षनाथ पाण्डित्य पूर्ण शैली, माधुर्यगुण सम्पन्न भाषा, विच्छित्तिपूर्ण अलंकार-प्रयोग, आंशिक सौन्दर्य वर्णन, शृंगाररसक वैभव सँ सम्पन्न गीत काव्यक हेतु विशेष रूप सँ स्मरणीय छथि।

१. सुकवि अमृतकर

पेअसि-प्रेम

१ : १ : १

एथाँ मनमन सर साजे। समन्दि पठाबह आओब आजे॥
वचनहु नहि निरबाहे। जनि लोभी तह किअअ सताहे॥
पेअसि प्रेम चिन्हायी। कैतव कएलें कि फल कन्हायी॥
नव नागरि नव नेहा। नव जउवन देल रूपक रेहा॥
सुपुरुस के सब आसा। चान्द चकोरी हरइ पिआसा॥
अभिनव कहहि न जाइ। पवनहु परसे कुसुम असिलाइ॥
अधर न लहइ उपागे। विद्रुम थोएल जनि एकहि ठामे॥
समअ न सहविहि मन्दा। मालति फुललि बासि मकरन्द॥
भनइ अमृत अनुरागे। कपटे कुसुमसर कौतुके गाबे॥
जसमा देवि रमाने। भैरवसिंह भूप रस जाने॥

वासवदत्ता

१ : २ : २

वासवदत्ता पूजए काम। आइलि मकरन्द बन अभिराम॥
वदन रूप देखि सबे कैओ बोल। चान्दक मण्डल कुण्डल डोल॥
अलकावलि संसयँ अवलम्ब। तिमिरक आँकुर की ससि-बिम्ब॥
किछु जनु पूछइ अधरक बात। अमिएँ सिंचलि जनि सुरतरु-पात॥

मदन-पूजन

१ : ३ : ३

चित्रँ लिखिअ अनुमाने। हमराहु नगर पुजिअ पंचवाने ॥
अड कौतुक एहि ठामे। परतष भए पूजा लेथि कामे ॥
नमो नमो कुसुमसरे। हमहु पूजओ देहे अभय वरे ॥
दइए पठउलिहुँ ताते। एहि नगरी के न बुझिअ बाते ॥
पुनविहिँ अछ एसगरी। एहि सनि न देखिअ दोसरि नगरी ॥
सुकवि अभिज्ञाकर भाने। कृष्णचरण बुध गुनक निधाने ॥

विरही वत्सराज

१ : ४ : ४

दह दिस भमि भमि लोचन आब। तेसरि दोसरि कतहु न पाब ॥
लगहि अछलि थनि विहि हरिलेल। तलितलता सागरिका भेल ॥
हरि हरि विरहे छुइल बछराज। वदन मलान कओन करु आज ॥
चान्दन शीतलता तोहरि काए। तखने न भेलिए हृदय मोहि लाए ॥
ते अधिकाइलि मानस आधि। धक धक कर मदनानल धाधि ॥
भनइ अभिज्ञाकर नागरि नाम। आँकबिक एलिहि सिरिजल काम ॥

२. विष्णुपुरी

नन्दुको कुमारे

२ : १ : ५ हे सखि हे सखि कहिओ न जाहे।
नन्दक अंगना कइसन उछाहे ॥
नन्दक नन्दन त्रिभुवन सारे।
यशोदे पाओल नन्दुज कुमारे ॥

मन भेल हरखित देखि तनु रूपे।
जनि भेल उदित दीप अँधकूपे ॥
आसलता पल्लव जनि देला।
मेदिनि सुरतरु आँकुर भेला ॥
विष्णुपुरी कह सुनइ गोआरी।
परम जोति अवतरल मुरारी ॥

प्रथम नेह

२ : २ : ६ प्रथम बएस जत उपजल नेह।
एक परान एक जनि देह ॥
तइसन पेम जदि बिसरह मोर।
काठहु चाहि कठिन हिअ तोर ॥
ए प्रभु ठाकुर न तेजह नारि।
तोह बिनु लागब कओन गोहारि ॥
सुपुरुस चिन्हिअ एहे परिनाम।
जैसन प्रथम तैसन अवसान ॥
टुटल पेम नहि लाग एकठाम।
विष्णुपुरी कह बुझसि विराम ॥

शिवशंकर भोरा

२ : ३ : ७ भल शिव शंकर भोरा,
बुझल जतीपन तोरा,
अति गोरा लो ॥
तपोवन उछल तपसी,
थिकह सकल गुण रसी,

शिर शशी लो ॥
जप तप सबे दूर गेला,
रमणि रङ्ग मन देला,
टू कि भेला लो ॥
कपट बोलथि मधुवानी,
हरलह्हि मोरि भवानी,
अति ज्ञानी लो ॥

काँधहि रुण्डेरि माला,
पहिरण बाहोरि छाला,
फणि माला लो ॥
विष्णुपुरी शिव दासे,
परि पूरयु मोर आसे,
दिग वासे लो ॥

तपसिआ

२ : ४ : ८ तपसिआ !
तोरे तपे केओ न भिखारी ।
पवलह राजकुमारी ॥
तपसिआ !
मोरे मुख हेरि हेरि हसे ।
तोरा मुख कत रूप वसे ॥
जटाजूट फोट गोट चन्दा ।
जानि जानल धूरिफन्दा ॥
फूल तोरल मए आसे ।
सेओ भेल बसहक घासे ॥

विष्णुपुरी हेन भाने ।
ओहे जोगि जगत किसाने ॥

रुसल महेश

२ : ५ : ६ भमि भमि पुछे गोरि, देह उपदेशे ।
मइ हे, कि देव मनाउब रुसले महेशे ॥
खाट तुरैआ सेज हुनि नैं सोहाबए ।
जतहु कतहु बाघछाल ओछाबए ॥
क्षीर कपूर पान हुनि न सोहाबे ।
आक धुतुर फुल तन्हि भल भावे ॥
विष्णुपुरी कह हित उपदेशे ।
हाथ काँकण बाँध बूढ़ महेशे ॥

३. सुकवि सदानन्द

जय दुर्गे

३ : १ : १०

जय जय दुर्गे दुर्गति हारिनि सब सिधि कारिनि देवी ।
भुगुति मुकुति दुहु दुले बिनु पाबिअ तुअ पद-पङ्कज सेवी ॥
विष्णु-विरञ्चि-विभावसु-वासव-शिव तुअ धरए धेआने ।
आदि सकति भगवति भव-भाविनि केओ न अन्त तुअ जाने ॥
तनु अति सुन्दर मरकत मनि जनि तीनि नयन भुज चारी ।
शङ्ख चक्र शर कर धनु धारिनि शशिशेखर अनुसारी ॥
मनिमय कुण्डल हार मनोहर नूपुर घनहन बाजे ।
किङ्किनि रन-रन सुललित कंकन भूषण विविध विराजे ॥

पञ्चानन-वाहिनि दाहिनि होइ सुमरि महेश विमोही।
सदानन्द कह चरन जुगल तुअ सरन कएल जग मोही ॥

शिव-नाट

३ : २ : ११

भौरी भरम अमिए बम चन्दा। बाघ जिविए रे बनह कर दन्दा ॥
कओने परि होएत नाट निरवाहे। परम बेयाकुल त्रिभुवन-नाहे ॥
शिरे सुरसरि भरे गेलि बढ़िआई। नयन हुतासन परशे मिझाई ॥
ससरि खसल फणि दिशे दिशे घुरे। तह्रिके उपरे धस कातिक मजुरे ॥
सुकवि सदानन्द निते कर सेवा। देथु अभय वर शंकर देवा ॥

अनुशय जाल

३ : ३ : १२

जाइते जमुना पार गे सखि भेटल नन्दकुमार ॥
पलटिओ न भेल निहारि गेसखि भेलहुँ सहजे गमारि ॥
वैरिनि भेलि मोरि लाज गेसखि हठे हरु हरिक समाज ॥
तहिषने सओ हिअ साल गे सखि पड़लिहुँ अनुसय जाल ॥
सुकवि सदानन्द गाब गे सखि समय गेले पछताब ॥

विश्लेष-पूर्व रजनी

३ : ४ : १३

जागह सुलाक्षनि छोटि अछ रएणी।
हम उठि समदह सारङ्ग-नयनी ॥
तिला एक समुह करह मुख अपना।
तोह हम दरशन होएत दहु सपना ॥
लाज नेवारि कहह किछु एहनी।
जिब अबलम्बि धरओ ताहि कहनी ॥

एत सुनि सुन्दरि मुहहु न बोलइ।
नयनक नीर ढरिअ हरि परइ॥
सुकवि सदानन्द सकरुण भनइ।
दारुण विहि पर दुख नहि जनइ॥

४ सुमति उमापति

शम्भु नटा

४ : १ : १४

जय शम्भु नटा जय शम्भु नटा।
हँसि हर हेरथि गौरि निकटा॥

भृङ्गी मधुर मृदङ्ग बजाबथि नन्दी निपुण झालि झमटा।
ताल तमौरा लए गुन गाबथि सङ्गहि नारद मुनि विपटा॥
चान कल सओं चुइल अमिअ रस तेहि जिउल अजिन लपटा।
गौरि सिंह देखि दुरहि पड़ाइलि लाज कओन सहजहि लङ्टा॥
भमइत भानु जटा लए झाँपल चमकि उठए जनि जलद घटा।
गङ्ग तरङ्ग भूमि भीजल अति नयन चमक जनि बिजुरि छटा॥
हँसथि सखी सभ दए करताली ताल धरथि जनि सहस्र घटा।
सानन भए वर दिअ ओ दिगम्बर सुमति उमापति भिनति गोटा॥

जनमल जदुराजे

४ : २ : १५

बेरि बेरि विरचथि विधि विधुमण्डल हरिमुख सरि नहि होए।
नयन निरखि निशि नलिन मलिन होअ नलिनी वन बस गोए॥

हरि एक जना ।
मोर सएह धना ॥

कनक किरिट पुर केउर नेउर कङ्कण किङ्किणि पाँती ।
इन्द्रनील मणि विसकरमे जनि कसल कनक कत भाँती ॥

शङ्क सुदर्शन गदा सरोरुह शारङ्ग पीअर वासे ।
जनि शशि सूरुज गेरुशिखर कुज इन्द्रधनु तलित अकासे ॥

मणि मुनि चरण जुगुत मुकुतावलि मिलित ललित वनमाला ।
जनि सागर सित सामर सरसिज हँसक पाँति विशाला ॥

धन भादव धन माल किसन पछ धन आठमि तिथि आजे ।
धन मथुरा धन देवकि बसुदेव जाहि जनमल जदुराजे ॥

कोटिओ काम उपाम न पावए की बरनए कवि जाने ।
सब परिहरि हरि-चरण हृदय धरि सुमति उमापति भाने ॥

मुगुध मधुकर

४ : ३ : १६

कमलिनि सङ्गे रङ्गे दिवस गमाओल कुमुदिनि निशि विसराम ।
भमर पुछिअ तोहि सरुप कहइ मोहि अधिक प्रीति कोन ठाम ॥

असन कुसुम रज भमर सुरभि भज दुहु विरचए एक साति ।
एक दिन बाँधि निरोधि धरति तोहि दोसरि बाँधति पुनु राति ॥

सौरभ लोभ मुगुध मधुकर मन जाए न केतकि पास ।
काँट बेधत अङ्ग रस नहिं परसङ्ग पाओब परम उपहास ॥

रस बुझ ते बुल रसिक सबहु फुल अधिक प्रेम गुणवान ।
छत्रपति भूप रसिक रस-विन्दक सुमति उमापति भान ॥

समुचित प्रेम

४ : ४ : १७

तोहें हमे समुचित प्रेम । रतने जड़ित जनि हेम ॥
भाविनि ॥
तोहें बनि जल हमे मीन । एक जीवन तन भीन ॥
हमे पाओल तोहें नीप । हमे गृह तोहें मणिदीप ॥
हमे कैरव तोहें चन्द । हमे हिअ तोहँहि अनन्द ॥
हमे अलि तोहें अरविन्द । अधर-मधुरिँ मकरन्द ॥
सुमति उमापति भान । हिन्दूपति रस जान ॥

अनुताप

४ : ५ : १८

सखि हे, कि कहब निज अगेआने ।
सुपहु कइल जबे रोस कएल तबे कर मूनल दुहु काने ॥
आएल गमन-वेरि नयन नीर भरि मोहि किछु कहिओ न भेला ।
एहनि करमहिनि हम सनि के धनि कर सँ परसमनि गेला ॥
ई हम जनितहुँ एहन निठुर पहु कुच कञ्चन गिरि साँधि ।
कौशल करतल बाहु-लता लए दृढ़ कए रखितहुँ बाँधि ॥
पिअ सुमरिअ जबे किअ न मरिअ तबे बुझि पड़ हृदय पषासे ।
हिमगिरि कूमरि चरण हृदय धरि सुमति उमापति भाने ॥

५. नृप जगज्ज्योतिर्म्मल्ल

भव-जल

५ : १ : १९

कबहु रअणि बड़ कबहु दिन बड़ छओ ऋतु भिन भिन रीति ।
तेहने सुख-दुख शरीर सबहिक खने आनन्द खने भीति ॥

जओ लागि तेल ताबे परगासए तेल बिनु दीप मिझाए।
तेहने पुरुब सुकृत फल भुञ्जिअ पुनु आबए पुनु जाए॥
बरिसा बरिसे नदी-नद पूरिअ सरद सुरुज लेअ सोखि।
कतने जतने तनु संजमे राखिअ गरसिअ जराएँ समोखि॥
दह दिस धाबए धन बटुराबए अबस होअ ताहि नाश।
बीज रकत मिलि जोडल काया करब तकर कओन आस॥
सपन समान मगन मूढ मानस चिन्तह शिवक सरूप।
एहे जञ्जाल जाल भब छेदह गाबए जगजोति भूप॥

सुरसरि

५ : २ : २०

ब्रह्मलोक सओ आनलि सुरसरि भुवपति भगिरथ नामे।
परम पवित्र भरत भुमि भूषण सबहिक पूरथि कामे॥
माय मन्दाकिनि शरण तोहारि॥
दरशने दुर होअ दुरित दु:ख, रस-परसे परम पद पाइ।
तसु महिमा एक शिव पए जानथि जहि धइलिहे शिर लाइ॥
सकल असार सार एहि कलियुग चारि पदारथ दाता।
नीर रूपे बिलसथि महिमण्डल संकट सबहिक त्राता॥
तिरिथराज जमुना जल संगमे धबल नील परवाहे।
असि-बरुणा बिच उत्तरवाहिनि सबहिक अभिमत साहे॥
सागर-संगम शेष महाशिर हरिहु लेल बिसरामे।
भगति लुबुध मति भूपति जगजोति अह-निश लेअ तसु नामे॥

ईश-गोरि-विलास

६ : ३ : २१

भवहि भवानिहि भेल बड दन्द ।
कौशल कौतुकें कएल कत छन्द ॥

लहुलहु अम्बर हरे हरि लेल ।
तखने भवानी दह दिश हेरे ॥

हसि कह देखिअ कतहु नहि केओ ।
चोरि न फाब तोहे देवक देओ ॥

गाँग चाँद फणि साखी मोर ।
बुझल तोहहि पर अम्बर चोर ॥

तखने बोलथि हर ई जनु बाज ।
बामा बाल दोजिहें की काज ॥

जओ तोहें प्रभु नहि साक्षी मान ।
तजो थिक समुचित शपथ विधान ॥

एत सुनि हर किछु बोलहिन जाए ।
लाजे विहुसि देल वसन देखाए ॥

ईश-गोरि का भेल विलास ।
नृप जगजोति कह पुराबथु आस ॥

मा विनु के

५ : ४ : १२

एत दिन खेपल तोहर शरण गए पड़ु अपराध अनेके ।
दीन हीन अति क्षीण सेवक हमे आस सगरि तोहे एके ॥
की देह छत्र कि भीखि मँगावह ईं सब तोहर अधीने ।
तोहर कृपा विनु मन मोर तलफए जल बिनु जैसन मीने ॥

गंजन सुनि गलित भेल मानस ताहु आबे तोहर बड़ाइ।
सहजओ दोष होअ शिशु जनका मा बिनु के कर उपाइ ॥
सुतक हरखे जननी होअ हरखित सबतहु ई व्यवहार।
हिमकर उदय जलधि जैसे बाढ़ए ए विधि करहु विचार ॥
जत देखिअतत हिए न धरिअ होअ हिअ जत कहहि न जाइ।
जानि अजानि तोहर गुण गाबिअ अवसर तोहहि सहाइ ॥
नृप जगजोति कएल जाहि आसा ताहि आबे उपजु तरासे।
तोहर चरण परताप ताप-हर प्रभु भए न ते जह दास ॥

सुपुरुष

५ : ५ : २३ सुपुरुष सोहए बचनक धीर।
संपति विपतिहि चाहिअ धीर ॥
तओ कर सोहए जओ कर दान।
हित उपदेश सुनिअए सेहे कान ॥
हृदयक शोभा पर उपकार।
जतनहु परिहरि राग विकार ॥
बदनक शोभा हरि गुण गान।
सब तहु से बड़ पर दुख जान ॥
नृपजगजोति कर धरम सहाए।
शिवक सेवा तह की नहि पाए ॥

जिव रह पहु ठाम

५ : ६ : २४ बहलि सगरि निशा अरुण पुरुब दिशा
निफल भेलिं ताहि आसे।
जदि किछु निशि सोअ सपने दरस होअ
अतिसए भेलि उदासे ॥

सजनी जिब रह तहिम पहु ठाम ।
नव अरविन्द मन्द मलयानिल
चाँद चाँदन भेल वामे ।।

जोरि दुअओ हाथ चरण धरिए माथ
निवेदओ सब तन लाई ।
पहु परसन मन जदि देख दरसन
तेहि पए सबे दुख जाई ।।

सारंग साद सुनि नव साहर-बनि
मनमथ दो गुण सतावे ।
हम सनि पापिनि के जग कामिनि
मनहु न धैरज आबे ।

कह नृप जगजोति शिवक चरण गति
कठिन कुसुमशर बाणे ।
पहु तुअ आओब सबे सुख पाओब
करब अधर मधुपान ।।

६. चतुर चतुरभुज

हरि देखह नयन भरि

६ : १ : २५

उरु जुगल पद विमल सोहावन नव पल्लव रुचि चोरा ।
दुइ करे मनसिज जनि अपुरुब गजे धयल सरोरुह ओरा ।।
धनि !
सुकृत सहसे हरि देखल नयन भरि जनम सफल भेल मोरा ।।

जगत जुवति मन मीन वरिस सन कुंचित कुन्तल भासे।
केदहु तरुणि गण नयन हरिणि गण बन्धन मनसिज पासे ॥

इन्द्र नीलमणि गिरि पर जनि सुरसरि ऐसन सोभ उरहारा।
सरद गगन घन नखत पाँतिसन की मुख-शशि-रुचि धारा ॥

वदन सुधाकर सेद सुधा झर पिब जनि नयन चकोरा।
चाँद विन्दु मुध मुक्त रुचि जनि बुध उगल सुधानिधि कोरा ॥

पार करथु हरि निरवधि भन नरि चतुर चतुरभुज गाऊ।
अभिनव नृप सिंहदलन महि जुगे जुगे होथु चिराऊ ॥

सुन्दर कान्हे

६ : २ : २६ जखने सँओ देखल रे मोए सुन्दर काहे।
मखने सँओ मदन वेदन मन जाने ॥
आनन लोलुअ रे चल लोचन जोरा।
ससि बसि पिब जनि अमिअ चकोरा।
भउँह भाँगि रसि रे हसि हेरलन्हि थोरा।
तहिखने हरलन्हि मानस मोरा ॥
चाँद चाँदन पिक रे मधुकर तनु जारे।
हरि हरि वैरि भेल सकल सँसारे ॥
चतुर चतुरभुज रे भन सुन वरनारी।
हरत तोहर दुख जानि मुरारी ॥

तोहहि रजनी

६ : ३ : २७

वदन चाँद धुअ केस तिमिर तुअ कि करह राति सजनी।
हार नखत रुच निचल चकवकुच मोरे मने तोहहि रजनी ॥
आरे !

साजनि चल-चल तोहर करम भल की फल कइए विलम्बे ।
उगत जगत भरि कर पसारि धरि नारि घैरि चल चन्दा ॥
न होएत गमन बन सङ्केत निकेत मन दोगुन बढ़ाओत दन्दा ।
करह विभूषने दूषन तनु जनु के जन जग नहि जाने ॥
रुचि लागि चान्द-कला ने अपेषए साँझ छाड़ि किछु आने ।
भनइ चतुरभुज सुमरिए माधव चल सखि तोरित सयानी ॥
सहस जनम पुन परिनत तुअ गुन परसन सारँगपानी ।

नव अनुराग

६ : ४ :२८

नव तनु नव अनुराग । माधव, नव परिचय रस जाग ॥
दुहु मन वसु एक काज । माधव, आँतर भए रहु लाज ॥
दिन-दिन दुहु तन छीन । माधव, एकओ ने अपन अधीन ॥
बिनय न एको भाख । माधव, निअ-निअ गौरव राख ॥
हृदय धरिअ जत गोए । माधव, नयन बकेत तत होए ॥
चतुर चतुरभुज भान । माधव, प्रेम न होए पुरान ॥

मानिनि

६ :५ :२६

अवनत न कर रे धनि आनन चन्दा ।
लोचन जुगल रे मोर होअओ सानन्दा ॥
न कर न कर रे धनि अपद रोसे ।
कहह भानिनि रे मोर किदहु दोसे ॥
अधर कोमल रे नव पल्लव भासे ।
मलिन न कर रे खरतर निसासे ॥

विरह दहन रे दह देह कराला।
देह हुतासन रे जनि मालतिमाला॥

चतुर चतुरभुज रे मन निजे गेआने।
सुन कलामति रे पिआ विनाए माने॥

७. सिद्धि नरसिंहमल्ल

अनुखन विरह

७ : १ : ३०

कओनहुँ कलावति रे रे दिढ गुने, बाँधल हमर पुरुब पुने।
निमिष आँतर जहि रे रे साजनि, मोरें मनें सहस जोजन जनि।

हृदय घरब आबे रे रे कओनें परिं, कतहु न देखिअ निठुर हरि।
नयन गरए जल रे रे पथ हेरि, गुन गन सुमरि सतओ बेरि।

हनए मनोभव रे रे पुनु-पुनु, अनुखन विरह विकल तनु।
धैरजें पाओब रे रे हितजन, तसु गुने सिद्धिनरसिंह भन।

सब विपरीत

७ : २ : ३१

बिनु भय मन धरि कएल सरन हरि आबे तुअ बुझल उदासे।
जे आबे जिव तह अधिक पेयसि रह तसु सङ्गे करह विलासे॥
माधव कि कहब हमें तोंह रामे।

जे जत अछल भल सबे विपरित भेल हमर करम परिनामे॥

प्रथम जानल हमे परम मुगुध मने हम सम तुअ नहि देहा।
बचन अमिअ वम हृदय कुलिस सम भले विधि बुझल सिनेहा॥

परिमल विसलेखि अमधु मालति देखि मधुकर किकरत पाने।
दुसह वेदन तेज हरिपदजुग भज नृप सिद्धिनरसिंह भाने ॥

विरह-वेदन

७ : ३ : ३२

पुरुब दुरित मोहि अरजल आबे सबे भेल परिनाम।
सखि देखिओ न भेल दिठि भरि हरि आनन हिमधाम ॥
से गुण गाहक रे विनु जग किछु न सोहावे ॥
का लागि विहि मोहि सिरिजलरे परम अभागिनि नारी।
वेदन कहब कओन परि निय जीवहु भेल भारी ॥
सीतले विस पवनासन विस मलयज घनसार।
हुतवह सम मलयानिल रे वैरी भेल सरस सेमार ॥
हृदयज शंभु विरोधे हन अविरल मनमथ वान।
धैरजें मिलत मधुरपति नृप सिद्धिनरसिंह भान ॥

निर्दय मदन

७ : ४ : ३३

पन्नग-भूषण मलयपवन अधिक होअ उदासे।
सजल सैवल मानसें केवल चाँदन चाँद हुतासे ॥
साजनि पुरुब सञ्चित पापें।
पाओल मानिक विधि अकामिक हरल दए संतापे ॥
मानल भवन जैसन कानन विषय विष समाने।
मदन परम निर्दय हृदय मरम मारल वाने ॥
करह सुजन सङ्गम जतन जें मोर रह पराने।
सुमुखि सुकृते मिलब बेकत सिद्धिनरसिंह भाने ॥

अवधि आसेँ

७ : ५ : ३४

विष सेमार पवनासन हारे। पवक सम धनि मान तुषारे॥
नोरहि काजर बहि महि परइ। ससि बसि मसि खज्जन जनि बमइ॥
ए पहु कह दहुँ कओन उपाइ। अपुरुब बेदन कि करति माइ॥
त्रिपुरासुर-रिपु-रिपु सर सहइ। अवधि आसेँ केवल जिव बहइ॥
हृदय सिनेह दहन सन दहइ। कहहि न पारिअ जत दुख सहइ॥
सिद्धिनरसिंह भन सुनि सखि बानी। सिनेह राख प्रभु पर दुख जानी॥

८. लोचन

सतत शिवङ्करि

८ : १ : ३५

जय जय जय जन सतत शिवङ्करि परिहित नर-सिर-माले।
लम्बित रसन दसन अति भीषण वसन मिलल बघछाले॥
चउदिस मानुस माँसु मुदित अति फेरु फुकर कत रासे।
मनिमय विविध विभूषने मण्डित वेदि विदित तुअ वासे॥
भूत परेत पिसाच निसाचर अगनित जोगिनि जाले।
जखने न जगत-जननि तुअ संगनि तहँन कहिअ कोन काले॥
विमल बाल-रवि-मण्डल सन तुअ तीन नयन पर गासे।
असुर रूहिर मदिरा मद मातलि वदन अभिअ सम हासे॥
तुअ अनुरूप सरूप बुझिअ नहि तँअओ तोहर गुन गाऊ।
जे कहि तुअ पदबन्ध करिअ देवि निज-जने लोचन लाऊ॥

हरि निधुवन

८ : २ : ३६

सनँद बदन विहुँसिआ ।
मधुबन जाइते मिलल तोर रसिआ ॥
कोटि मदन-रुचि रुचिर कलानिधि ।
अतनु सुतनू सनि तोँहहु सबहि विधि ॥
चाँद धवल ऋतुराज रजनि आ ।
हरि निधुवन मने चललि सजनि आ ॥
कुसुमित वन घनसार समीरन ।
विविध विहङ्ग-निनाद मदन-घन ॥
सुनसि न मधुर मधुर मुरली-रव ।
सुकृत सफल कर सबे समुचित तब ॥
लोचन भन बुझ सरस विमल मति ।
मधुमति-पति महिनाथ महीपति ॥

विषम बिरह कलेश

८ : ३ : ३७

जलद जाल कराल बारिस दिवस उपरात भेल ।
बधिक बालभु अवधि बिसरल अजहु मिलि नहि गेल ॥
सजनि आ ॥

तिमिर तति बिकरार आमिनि निअर कामिनि कांत ।
नाह निरदए बिसरि बैसल मोहि भेल जीवन अन्त ॥

मधुर दूर मयूर कूजित समद दादुर-नाद ।
समन सन घन दहन बरिसए कुलिस सर बिसमाद ॥

नीर निधि-सुत-सुमुखि थिर कर न कर मानस खीन ।
अचिरेँ थिर परबास परिहरि हरि बहुराअोब दीन ॥

सुमति लोचन भन सुधीजन विषम विरह कलेश।
जानकी-जनि-भूमि-भूषन बुझ महिनाथ नरेश॥

बिखिनि सोहागिनि

८ : ४ : ३८

मलिन वसन विसमादलि रे देखलि धनि खीनि।
नयन नीरें परिपूरलि रे चित चिन्ता-लीनि॥

पास बैसि कत पूछलि रे सत भाँति बुझाए।
तैंअओ रहलि तेति भाँतिहि रे मरमसि सिर नाए॥

सुमुखिक सुखन न सम्भाषन रे मुख नहि परगास।
अनुखने बिखिनि सोहागिनि रे तेज दीघ गिसास॥

कमलवदनि मनिमानिक रे धनि धीर सयानि।
तोरित गइए परिबोधिअ रे हरि ऐसनि जानि॥

लोचन भन मन-जानक रे मधुमति देवि कन्त।
बुझ महिनाथ महीपति रे विरहिनि-मन-तन्त॥

९ सन्त साहेबरामदास

६ : १ : ३६

कृष्ण जन्म

नन्द हृदय बड़ आनन्द भेल।
जखन परसमनि विहि आनि देल॥
हरष मंगल भेल देखि हरि रूप।
सुर-नर-मुनि नहि एहन सरूप॥

कहओं कतेक हिनि कएल नेहाल ।
मेटल नगर सबहि के साल ॥
जेहन हरष नाहि तेहन भण्डार ।
की विलहओं चित परल नचार ॥
जनमे जनमे तप एहन न मोर ।
तइअओ कलानिधि मिलल चकोर ॥
चौदह भुअन जनि जस मोहि देल ।
जत अपजस तत हरिकहु लेल ॥
कृष्णजन्म गुण अगम अथाह ।
साहेब शेष पाब नहि थाह ॥

श्याम विनु

६: २: ४०.

कानन सून श्याम विनु तट यमुनातीर ॥
सुखलि लता कुम्भलाएल फूल,
उसरल हरि फुलबरिआ हो जत सुरतरु तूल ॥
उड़ि गेल भमर तेजिकह भौन,
कतहु न मोर कुहुक वन कोकिल भेल मौन ॥
वंशीवट तट यमुना घाट,
कूस-डाभ जनमल देखि हिअरा मोर फाट ॥
साहेब दास विना नन्दलाल,
सगर नगर ब्रज उजरल सभ भेल बेहाल ॥

सीता-राम-समाज

६ :३ :४१.

जखन रामचन्द्र धनु तोड़ल मिथिला भेल आनन्द ।
हीरा रतन लुटाबए भूपति मेटल कठिन दिन मन्द ॥

जय जय गगन करए ब्रह्मादिक सुर-मुनि सहित महेश ।
पूरन ब्रह्म जनकपुर पहुँचिअ मेटल सकल कलेश ॥
आनन्द हरष बरनि नहि आबए सीता-राम समाज ।
चौदिश गान करए सभ भाविनि नाना बाजन बाज ॥
शोभा-धाम नाम अघमोचन कहँलगि कहब बनाए ।
पावन परस जनक नृप नगरी तहुँ प्रभु पहुँचिअ आए ॥
साहेब ध्यान धरए गुन सुमिरए माँगए भगति भगवान ।
छमि अवगुन दरसन दिअ रघुबर पूरन ब्रह्म पुरान ॥

सीताक उदेसे

६ : ४ : ४२

जखन आएल रघुनन्दन हे मारिच मृग मारी ।
सून भवन बिनु जानकि हे बैसल हिअ हारी ॥
खन खन भवन विलोकथि हे खन करथि पुछारी ।
आज कहाँदहु जानकि हे गेलि कुटिआ छारी ॥
चन्द्रवदनि धनि बिछुरलि हे सुनु लछुमन भाई ।
कलपि पुंछथि रघुनन्दन हे सिर करतल लाई ॥
पलक पलक जुग बीतल हे जामिनि भेल सेसे ।
साहेबदास गोचर कर हे सीआक उदेसे ॥

भजन सम पामर

६ : ५ : ४३

रे मन पामर मुगुध अन्ध ।
अबहुँ भजन करू तेजि धन्ध ॥
टुटल दाँत मुख मलिन भेल ।
बाल जुवा बहि दुअओ गेल ॥

केश पाकि भेल बकक पाँखि ।
बाढ़ल बरुनी मुन्दल आँखि ॥

कापए गात नहि आबए बात ।
जइसे तरुवर के डोलए पात ॥

कबहु सबद नहि सुनिअए कान ।
एक पल दिढ़ नहि रहए गेआन ॥

वृथा जनम बहि जगत गेल ।
काज एको नहि अपन भेल ॥

गुरुसेवा नहि हरिक धेआन ॥
एहन हृदय मोर भेल पखान ॥

साहेबदास इ सभ असार ॥
एक नाम रघुवर के सार ॥

जेहि सुमिरि तरि अधम गेल ।
राज अमरपुर बास भेल ॥

१०. मनबोध

शरणागत

१० : १ : ४४

हे हर सभ विधि मोर अपराधे ।
परनागरि परधन हम चिन्तल कएल कथू नहि बाधे ॥
यौवन मदन मतल हम अछलहुँ ने गुनल दहिन वामे ।
निज कर हरखि गरल हम पीउल परिवेदन परिणामे ॥
विषम विषय रस वस भय रहलहुँ वएस सगर बिति गेला ।
सङ्कट हरण चरण सरसीरुह मधुकर भए नहि भेला ॥

यम सम किङ्कर परम भयङ्कर विषम देखब कोन भाती।
यम शासन देखि जिउ मोर कापए निज कर धरु मोर साती॥

सपनहुँ हम शिव शिव नहि भजलहुँ ने भजलहुँ भगवाने।
केशरि बीज उसर छिड़िआओल धिक धिक हमर गेआने॥

दुहु कर जोड़ि मिनति अभिनत भए कवि मनबोध एह गावे।
हम अपराधि मानि शरणागत तोहि जेहेन मन भावे॥

अनुखन मोह

१० : २ : ४५

अवधि बेतित भेल मन अवगाहि। हारि बैसलि आब कि कहति काहि॥
दिन दिन तनु खिन अनुखन मोह। जिउति जखन अवधारि बिछोह॥
वचन विराम नयन ढरु नीर। फुजल चिकुर लट नहि चेत चीर॥
बिसरि बैसल पहु मन अनुमानि। दशमि दशा निअराएल आनि॥
रहिअ विदेश सहिए दुखशेष। एहनि रमनि घर योगिनि भेष॥
दए विसवास सखी गण राख। प्राण पाहुन सन जाएब भाख॥
मन गुनि मनबोध कवि इहो गाब। नृपति नरेन्द्र सिंह बुझु भाव॥

बिरह धार

१० : ३ : ४६

हेरि हेरि पथ बनमाली नयन झाम्हर भेल।
सपनहु कबहु न पाबिअ जब सओं कान्हर गेल॥
गिरि गहि गिरिधर राखल एत दिन ई छल नेह।
शिवशिव बिरहधार बिच आइ परल से देह॥
जे पट-भूषण परिहिअ हरि हिअअ-सम सोहाब।
से पट-भूषण दूषण देखइते लगइछ आब॥

क्रूर करम अकरूरक बिधि बिपरित जनि भेल।
देखइते चान चकोरहि जनि घन आँतर देल ॥
नयन कोर जल पूरल पुनिपुनि झापहि दीन।
मदन दहन अलि गानहु जिअ ललफए जनि मीन ॥
भन मनबोध कहब कत एत दिन अति सुख देल।
धैरज धरहु भवन बसि अब हरि कुबुजिक भेल ॥

आयल ब्रज-सुख

१० : ४ : ४७

पद : भादव मास बरिसु घन सभ मन शीतल रे, ललना,
जामिनि अष्टमि असित पहर दुइ बीतल रे ॥

छन्द : बिति गेल जामिनि पहर दुइ भेल करय गर्दम घोल यो।
दमकि दामिनि दसओ दिस निस करय दादुर सोर यो ॥

पद : सोर कतहु किछु नहि भेल योगनिन्द पसरल रे, ललना,
वसुदेव अति सुख मानल जानल नहि खल रे ॥

छन्द : खल कतहु किओ नहि सुनल निय मन गुनल नहि किछु संग यो।
वसुदेव धाय उठाय हरिकेँ हृदय लाओल अंग यो ॥

पद : अङ्कम भरि लेल बालक अरि उर शालक रे, ललना,
बानन जदुकुल भालक सुर-मुनि पालक रे ॥

छन्द : नरपाल कंसक काल उतपन बाल गोकुल गेब यो।
वसुदेव माथ चढ़ाय हरिकेँ पार जमुना भेल यो ॥

पद : फणिपति फणा पसारल बरखा निवारल रे, ललना,
बरिसु पयोधर धार पड़य नहि पारल रे ॥

छन्द : पार भय सुत बदलि वसुदेव जखन गेल निज गेह यो।
टुटल नन्दक मारि के निन्द हुलक लागल देह यो ॥

पद : सुनि दरारिनि सभ आइलि बोललि हँसि मुखरे, ललना,
हरि देखि हृदय जुड़ायल आयल व्रज सुख रे ॥

छन्द : सभ मुखल तरुवर भेल हरिअर करए किन्नर गान यो।
रातिहि जनमल नन्द-नन्दन प्रातहि भेल जग जान यो ॥

पद : जगत जननि घर गाओल तेँ मन भाओल रे, ललना,
मनबोध कवि इहो गाओल हरि हिअ लाओल रे ॥

छन्द : हरि हृदय लाबए जे इ गाबए सुनए मानस लाए यो।
भव-सिन्धु-तायक त्राण-दायक-हरषे भव तरि जाए यो ॥

११. हर्षनाथ

वन दुर्गा

११ : १ : ४८ जय जय विन्ध्यनिवासिनि।
तनु-रुचि निन्दित दामिनि ॥
आनन शशधर - मण्डल।
तीन नयन श्रुति कुण्डल ॥
कनक कुशेशय आसन।
बसय निकट पञ्चानन ॥
शंख चक्र निर्भय वर।
कर वहु शशधर शेखर ॥
तुअ पद पङ्कज मधुकर।
हर्षनाथ भन कविवर ॥

प्रथम अनुराग

१२ : २ : ४९

कि कहब दुहुक प्रथम अनुरागे।

गीत-सूची

सुपुरुष सोहए वचनक —

हेरि हेरि पथ वनमाली —

हे सखि हे सखि —

हे हर सब विधि —